❋ श्री गंगा जी का ध्यान ❋

आदावादिपितामहस्य निगमव्यापार पात्रे स्थितम्।
पश्चात्पन्नगशयिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जह्नो महर्षेरियम्।
कन्या कल्मष हारिणी भगवती भागीरथी दृश्यते।।

(धर्म सिन्धु)

महर्षि जह्नू की कन्या–जाह्नवी–पापहारिणी–भगवती भागीरथी सर्वप्रथम प्रजापति भगवान् ब्रह्मा के कमण्डलु के जल रूप में तदनन्तर शेषशायी भगवान् विष्णु के चरणोदक रूप में तथा पुनः भगवान् शंकर के जटाविभूषण रूप में भक्तों को दर्शन प्रदान करती है।

इदं ब्रह्मा इदं विष्णु इदं देवो महेश्वरः।
इदमेव निराकारं निर्मलं जाह्नवी जलम्।।

यह गंगा जल साकार रूप में ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर है और यह ही निराकार रूप में निर्मल जाह्नवी जल है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, वंश बचाओ

श्री गंगा देव्यै नमः

श्री गंगा सभा (रजि०) हरिद्वार

की ओर से

आप सभी को नव-सम्वत्सर २०७४ की हार्दिक शुभकामनायें।

कृष्ण कुमार शर्मा
सभापति

पुरूषोत्तम शर्मा ''गांधीवादी''
अध्यक्ष

रामकुमार मिश्रा
महामंत्री

हम सबका एक ही संकल्प अविरल गंगा, निर्मल गंगा।
पॉलिथिन प्रतिबन्धित है, पॉलिथिन का प्रयोग न करें।
ब्रह्मकुण्ड हर की पौड़ी की मर्यादा बनायें रखें।

website: www.shrigangasabha.org
Email: helpdesk@shrigangasabha.org

अभ्यर्थना

आदरणीय श्रद्धालु महानुभाव,

परम हर्ष के साथ श्री गंगा तिथि पर्व निर्णय पत्रिका सम्वत् 2074 विक्रमी आपके उपयोगार्थ प्रस्तुत करते हुए श्री गंगा सभा (रजि.) आपको 'नव सम्वत्' की हार्दिक शुभ कामनाएं प्रेषित करती है। आपके लिए नूतन वर्ष समृद्धि वैभव एवं मंगलकारी हो।

आपको विदित ही है कि प्रत्येक वर्ष श्री गंगा सभा की विद्वत्–परिषद वर्ष के पर्व, तिथि, पुण्यकाल में एकरूपता स्थापित करने हेतु तथा व्रत, त्यौहार आदि एक ही दिन मनाये जा सकें, इस उद्देश्य से तिथि पर्व सूची का यह सर्वसम्मत प्रकाशन करती आ रही है क्योंकि विभिन्न पंचांगों में देश–काल के अनुरुप भिन्नता पाई जाती है। सर्वसाधारण की जानकारी के लिये प्रकाशित की जाने वाली यह पर्व सूची सरल, बोधगम्य होने के कारण निरन्तर लोकप्रिय हो रही है तथा देश–विदेश में भी इसकी मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है। श्री गंगा सभा द्वारा यह प्रकाशन विगत कई दशक से निःशुल्क वितरित किया जाता है। श्रद्धालु पाठकों को श्री गंगा सभा कार्यालय से यह पत्रिका वर्ष भर उपलब्ध होती है। यह पत्रिका आपको डाक द्वारा निःशुल्क भेजे जाने की भी व्यवस्था है।

भारत रत्न महामना पं0 मदन मोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित श्री गंगा सभा के शताब्दी वर्ष में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी, 29 सितम्बर 2016 को हरिद्वार पधारे एवं गंगा आरती में सम्मिलित होकर गंगा सभा के कार्यो की भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

जो श्रद्धालु इस पर्व पत्रिका का हिन्दी अथवा अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित कराने में सहयोग करना चाहते है, सभा उनका हार्दिक स्वागत करती है। इस हेतु सभा के कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है।

श्रद्धालुओं को आमन्त्रण

श्री गंगा सभा (रजि.) देशकाल के अनुरूप प्रतिदिन हरकी पैड़ी पर श्री गंगा पूजन, आरती, भोग, सत्संग आदि का आयोजन करती आ रही है। इन धार्मिक अनुष्ठानों में सम्मिलित होकर यात्रीगण अपनी यात्रा को सफल मानते हैं। जाति, वर्ण, वेष, भाषा, प्रान्त, क्षेत्र, उच्च–निम्न आदि विभेदों से ऊपर उठकर सभी लोग समान रूप से माँ गंगा के अंक में तन्मय भाव से प्रातः एवं सायंकाल की आरती में शंख–घण्टे, घड़ियाल की मधुर ध्वनि, वैदिक मन्त्रों के कर्णसुखद घोष, गंगा प्रवाह में प्रवाहित असंख्य दीप–माला, आरती की दीर्घाकार प्रज्वलित ज्योति, निर्मल जल में पड़ता हुआ उसका स्वर्णिम प्रतिबिम्ब, सहस्त्रों भावुक भक्तों के मुख से समवेत स्वर का कीर्तन व माँ गंगा का जय–जय नाद देख और सुनकर मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। श्री गंगा सभा इस अलौकिक आनन्द का लाभ उठाने के लिए आप सबको आमन्त्रित करती है। जो श्रद्धालु यात्रीगण स्वयं आरती कराना चाहें अथवा उक्त धार्मिक कृत्यों में भाग लेना चाहें वह हमारी वेबसाइट पर जाकर अथवा पत्राचार द्वारा श्री गंगा सभा (रजि.) में सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रातःकालीन मंगला आरती	–	प्रतिदिन सूर्योदय के समय
सांध्यकालीन श्रृंगार आरती	–	प्रतिदिन सूर्यास्त के समय
श्री गंगा जी का भोग	–	नित्य अपराह्न 12 बजे

तीर्थ शिरोमणि हरिद्वार एवं हरकी पैड़ी (ब्रह्मकुण्ड)का महत्व

पतित पावनी, मोक्षदायिनी, भगवती भागीरथी मां गंगा के सुरम्य तट पर अवस्थित एवं हिमालय की शिवालिक पर्वत श्रेणियों की सुन्दर नयनाभिराम, प्राकृतिक दृश्यावलियों से घिरा रमणीक विश्वविख्यात महानतम तीर्थ–हरिद्वार का ऐतिहासिक, पौराणिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त गौरवशाली स्थान है। तीर्थराज हरिद्वार सदैव कुम्भ, अर्द्धकुम्भ जैसे महान पर्व मेलों पर भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता, देश की गरिमा तथा हिन्दू धर्म की विशालता का पावन सन्देश समस्त संसार को देता रहा है। हरिद्वार का हिन्दू तीर्थों में प्रमुख स्थान है।

पर्वतराज हिमालय की गोद में अठखेलियाँ करती पुण्य सलिला, भागीरथी माँ गंगा असंख्य मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करने हेतु हरिद्वार की समतल भूमि पर अवतरित हुई है। शिखरावलियों से उतर कर समतल भूमि पर जाह्नवी गंगा की नई प्राकृतिक छटा का मनमोहक रूप देखते ही बनता है। ब्रह्मकुण्ड हरकी पैड़ी में श्रीगंगा जी का दर्शन पुण्य की दृष्टि से तो परम स्तुत्य है ही, अपितु प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से भी अद्वितीय है। भारत के अनेक धार्मिक ग्रन्थों व पुराणों में ब्रह्मकुण्ड हरकी पैड़ी की महिमा का वर्णन किया गया है।

हरिद्वार पावन तीर्थ पर हर की पौडी (ब्रह्मकुण्ड) कुशावर्त घाट आदि प्रसिद्व तीर्थ है जिनका वर्णन पुराणों में स्पष्ट रूप से मिलता है।

स्कन्द पुराण के केदारखण्ड अध्याय 111 मे वर्णन आता है कि इलावृत्त वर्ष में श्वेत नामक महायशस्वी राजा हुए उन्होनें गंगातट पर दस हजार वर्षो तक दारूण तप किया तब ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर वर मांगने के लिए कहा, राजा श्वेत ने कहा यहाँ आपका (ब्रह्माजी) विष्णु जी तथा शिवजी का शीघ्र निवास हो, सभी देवों की स्थिति भी यहां हो, पृथ्वी पर जितने तीर्थ है वे सब यहाँ पर स्थिर रहें, ब्रह्मा जी ने कहा यह तीर्थ महापुण्यदायक तथा तीनों लोकों में अत्यन्त दुर्लभ होगा तथा आज से मेरे नाम से विख्यात होगा जो इस ब्रह्मकुण्ड में स्नान करेंगे व परम पद को प्राप्त करेंगे यहां जो कर्म किया जायेगा वह अनन्त फलदायक होगा।

राजा विक्रमादित्य के भाई श्री भतृहरि ने यहां तपस्या करके परमपद को प्राप्त किया, उनकी स्मृति में राजा विक्रमादित्य ने यहाँ पौडियों का निर्माण कराया जो कालान्तर में हरि की पौड़ी के नाम से प्रसिद्व हुआ।

ब्रह्मकुण्ड के दक्षिण में कुशावर्त नामक महातीर्थ है स्कन्दपुराण के केदारखण्ड अध्याय 112 में वर्णन आता है। गंगा आगमन के समय महातपस्वी दत्तात्रेय मुनि दस हजार वर्षो तक एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या में लीन थे, तभी गंगा ने उनके कुश दण्ड तथा कमण्डलु को बहा दिया परन्तु गंगा मुनि के कुशों को अपने भँवर में धारण किये रही तब मुनि को बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ परन्तु ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा गुरू दत्तात्रेय की स्तुति करने पर मुनि ने प्रसन्न होकर कहा–इस श्रेष्ठ तीर्थ में आपका नित्य निवास हो यहां गंगा ने मेरे कुशों को अपने भंवर में धारण किया है। अतः अब से यह तीर्थ कुशावर्त नाम से प्रसिद्ध होगा जो धन्य मानव यहाँ स्नान तथा पितृ श्राद्ध तर्पण दान–यज्ञ

आदि करेंगे उनके पितरों तथा उनका भी पुनर्जन्म नहीं होगा अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होंगे, महातीर्थ कुशावर्त में दिया गया दान कोटि गुणा फलदायक होगा।

इसके अतिरिक्त बिल्केश्वर नीलधारा तथा कनखल महातीर्थ है। इनमें स्नान करने से पुनर्जन्म नहीं होता।

प्रत्येक हिन्दू की यह हार्दिक अभिलाषा रहती है कि हरिद्वार आकर करोड़ों मानवों के श्रद्धा केन्द्र, पवित्रतम तीर्थ स्थल ब्रह्मकुण्ड में स्नान करके अपना लोक–परलोक सुधारें। अपने मृतक सम्बन्धियों की अस्थियाँ ब्रह्मकुण्ड के पवित्र गंगाजल में प्रवाहित करें और अपने पितरों के निमित्त हरिद्वार स्थित दूसरे पौराणिक तीर्थस्थल कुशावर्त में श्राद्धतर्पण क्रिया आदि करें।

श्री गंगा सभा की स्थापना का इतिहास

हरिद्वार हरकी पैड़ी में पतित पावनी कल–कल निनादिनी, कलिमलहारिणी, भवमोचिनी भगवती भागीरथी की अविच्छिन्न धारा प्रवाहित होती रही है परन्तु सन् 1914 में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार के नहर विभाग ने गंगा जी की प्राकृतिक एवं अविच्छिन्न धारा को बाँध द्वारा अवरूद्ध करके उसे कृत्रिम एवं नियन्त्रित धारा के रूप में हरकी पैड़ी में प्रवाहित करने की कलुषित योजना बनाई थी। इस योजना का ज्ञान होते ही स्थानीय तीर्थ–पुरोहित समाज एवं श्रीमहन्तों में असन्तोष उत्पन्न हो गया और शीघ्र ही यह असन्तोष एक तीव्र रोष में बदल गया।

सौभाग्य से इस रोष को ब्रह्मगौरव भारतभूषण महामना पं0 मदन मोहन मालवीय जी का आशीर्वाद प्राप्त हो गया, उन्होंने तीर्थ–पुरोहित समाज तथा श्रीमहन्तों का नेतृत्व किया तथा एक जन–आन्दोलन को जन्म दिया। महामना मालवीय जी के जन–आह्वान से प्रेरित होकर भारत के प्रमुख राजा

दरभंगा नरेश, जयपुर नरेश, अलवर नरेश तथा कलकत्ता के न्यायाधीश श्री चटर्जी ने उसमें भाग लिया, इसके अतिरिक्त श्री सुखवीर सिंह एम.एल.सी. मुजफ्फरनगर, श्री पं0 देवरत्न शर्मा, श्री महन्त लक्ष्मणदास जी देहरादून, श्री आनन्द नारायण जी देहरादून, अवकाश प्राप्त चीफ इन्जीनियर राजा ज्वाला प्रसाद जी आदि ने इस धर्म आन्दोलन में मालवीय जी को पूर्ण सहयोग दिया। इस आन्दोलन के स्थानीय नेताओं में तीर्थ पुरोहित श्री सुरजी बाबू पण्डा, पं० परमानन्द सराय वाले, सरदार रामरक्खा जी वशिष्ठ, पं. आत्माराम विद्याकुल, पं. कृपाराम शर्मा, पं. गंगाप्रसाद मिश्रा विशेष उल्लेखनीय है।

अन्ततः अंग्रेजी सरकार के शासक गवर्नर महोदय को इस आन्दोलन के सम्मुख घुटने टेकने के लिए विवश होना पड़ा और गंगा जी की प्राकृतिक एवं अविच्छिन्न धारा पर बांध लगाने की उक्त कलुषित योजना को रद्द करना पड़ा। गवर्नर महोदय ने स्पष्ट शब्दों में आश्वासन दिया कि धारा नं० 1 जिसके द्वारा ब्रह्मकुण्ड हरकी पैड़ी में जल पहुंचता है, उसे अवरूद्ध न किया जायेगा तथा निकटस्थ घाटों पर निर्बाध प्रवाहित होने दिया जायेगा। हिन्दू समाज की सहमति के बिना इस सम्बन्ध में कोई भी निर्णय न लिया जायेगा। निश्चय ही यह धर्म एवं आस्था की अविस्मरणीय विजय थी।

शीघ्र ही गवर्नर महोदय द्वारा दिये गये आश्वासन की नहर विभाग द्वारा अवहेलना आरम्भ हो गयी। नहर विभाग ने प्राकृतिक धारा नं0 1 पर एक बांध बनवाना चाहा, जिसके निर्माण से गंगा जी की प्राकृतिक धारा की अविच्छिन्नता समाप्त होनी प्रायः निश्चित हो गई। अतः आन्दोलन ने पुनः जोर पकड़ा और भारत रत्न पंड़ित मदन मोहन मालवीय जी ने पुनः इस आन्दोलन

का नेतृत्व किया। देश भर में नहर विभाग के इस निर्णय के विरूद्ध सभाएं आयोजित करके विरोध प्रदर्शित किया गया। इस आन्दोलन ने दो वर्ष के अन्दर विराट रूप धारण कर लिया। तत्कालीन गर्वनर सर जेम्स मेस्टन का सिंहासन डोल उठा और विवश हो उन्हें इस आन्दोलन की तुष्टि का समाधान खोजने हेतु गम्भीर विचार करने के लिए एक विशाल सम्मेलन आयोजित करना पड़ा। यह सम्मेलन 18–19 दिसम्बर सन् 1916 को हरिद्वार में सम्पन्न हुआ जिसमें ग्वालियर, जयपुर, बीकानेर, पटियाला, अलवर, बनारस, कासिम बाजार आदि के राजा–महाराजा तथा अनेक विश्वविख्यात हिन्दू नेता सम्मिलित हुए। मालवीय जी ने इस आन्दोलन में भारतीय जनमानस का प्रतिनिधित्व किया तथा सरकार के निर्णय का जोरदार विरोध किया। दो दिन तक विस्तृत वाद–विवाद हुआ और अन्त में भारत रत्न मालवीय जी के अथक प्रयास से अंग्रेजी सरकार को जन आन्दोलन की भावना के समक्ष समर्पण करना पड़ा। फलस्वरूप सरकार को हिन्दू जनता से स्थाई एवं लिखित समझौता करना पड़ा जिसमें यह स्पष्ट उल्लेख किया गया कि हरकीपैड़ी से एक मील नीचे तक कोई बांध नहीं बनाया जायेगा तथा गंगा जी की धारा को अविच्छिन्न बनाये रखने एवं तीर्थ की मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सरकार द्वारा अनेक स्पष्ट आश्वासनों का इस समझौते में समावेश किया गया।

उक्त समझौते को दोनों पक्षों ने सर्व सम्मति से स्वीकार किया जिसके कारण जन–आन्दोलन की उग्रता पर्याप्त रूप से शान्त हो गई, परन्तु

हिन्दू नेताओं के मस्तिष्क में यह आशंका शेष रही कि इस समझौते की भविष्य में पुनः अवहेलना न हो जाये अथवा तीर्थ की पवित्रता एवं मर्यादा भंग न हो सके। अतः एक ऐसी संस्था की आवश्यकता अनुभव हुई जो हिन्दू जनता का स्थाई प्रतिनिधित्व कर सके तथा तीर्थ की मर्यादा एवं सुव्यवस्था को संतोषजनक रूप से बनाये रखने का महान उत्तरदायित्व वहन कर सके। इस पवित्र भावना से प्रेरित होकर महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने हरिद्वार के स्थानीय तीर्थ पुरोहित समाज और श्रीमहन्तों के सहयोग से सन् 1916 में श्री गंगा सभा (रजि.), हरिद्वार की स्थापना की।

श्री गंगा सभा (रजि.) हरिद्वार का संक्षिप्त परिचय–

विश्वविख्यात तीर्थ हरिद्वार में ब्रह्मकुण्ड हरकी पैड़ी, कुशावर्त एवं कनखल आदि प्रमुख तीर्थ स्थल हैं और इन तीर्थस्थलों की पवित्रता, स्वच्छता एवं व्यवस्था का दायित्व यहां की एकमात्र प्रबन्धकारिणी संस्था श्री गंगा सभा (रजि.) के ऊपर है।

हरकी पैड़ी की सफाई, स्वच्छता, प्रबन्ध व्यवस्था एवं श्री गंगा जी की प्रातः एवं सांध्यकालीन चित्ताकर्षक आरती का दैनिक आयोजन, नित्य विद्वान पण्डितों द्वारा कथा, धर्मोपदेश, निःशुल्क चिकित्सा व्यवस्था, सैकड़ों स्वयंसेवकों के सहयोग से पर्व–मेलों का प्रबन्धन आदि कार्य सभा की सेवा के प्रमुख अंग हैं। सभा ने समय–समय पर अनेक जनोपयोगी कार्य तीर्थ की पवित्रता एवं मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सम्पन्न किए तथा कराए हैं। हरिद्वार का जो वर्तमान स्वरूप आपके सामने हैं, इसमें श्री गंगा सभा का

विशेष योगदान रहा है।

उत्तराखण्ड के अति पवित्र और प्राचीन पुण्य क्षेत्र हरिद्वार, कनखल, ऋषिकेश और मायापुरी के गंगा तटस्थ तीर्थ स्थानों की पवित्रता, मर्यादा और अधिकारों की रक्षा करना, माँ गंगा तथा उसके पुनीत भक्ति भाव का संरक्षण करना श्री गंगा सभा के उद्देश्यों में प्रमुख है। परम सन्तोष एवं हर्ष का विषय है कि सभा अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करती चली आ रही है। आज सभा का 100 वर्ष का भव्य एवं प्रेरक इतिहास है।

श्री गंगा सभा की उपलब्धियां एवं कार्य विवरण–

श्री गंगा सभा स्थापना के समय से ही प्राणी मात्र की भलाई तथा धार्मिक उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रही है। सभा द्वारा प्राप्त उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैं–

(1) श्री गंगा सभा के प्रयास से हरकी पैड़ी क्षेत्र में चमड़े की बनी वस्तुएँ जूता, चप्पल आदि ले जाने पर सन् 1927 में प्रतिबन्ध लगाया गया हरकी पौड़ी क्षेत्र में सिनेमा विज्ञापन लगाया जाना वर्जित किया गया है। श्री गंगा सभा नहीं चाहती कि तीर्थ यात्रियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचे।

(2) घाटों के विस्तार की आवश्यकता को देखते हुए सभा ने सन् 1938 में हरकी पैड़ी के घाटों का विस्तार कराया।

(3) सन् 1935 में कथा सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। नगर पालिका

द्वारा हरकी पैड़ी क्षेत्र में कथा धर्म प्रचार आदि पर रोक लगाई जा रही थी। श्री गंगा सभा द्वारा सत्याग्रह कर म्युनिसिपल बाईलाज में संशोधन कराया गया जिससे श्री गंगा सभा को हर की पौड़ी पर कथा, धर्म प्रचार हेतु कानूनी मान्यता प्राप्त हुई।

(4) सन् 1937 में हरकी पैड़ी पर अस्थि प्रवाह आन्दोलन की सफलता से अस्थि प्रवाह घाट का निर्माण हुआ।

(5) श्री गंगा सभा के प्रयास से माँ गंगा जी के जल को प्रदूषण मुक्त रखने हेतु नगर में सन् 1933 में सीवर लाइन की योजना स्वीकृत हुई तथा सन् 1937 में योजना का क्रियान्वयन हुआ। तभी से निरन्तर इस योजना पर कार्य चल रहा है।

(6) गंगा सभा के संस्थापक महामना भारत रत्न पं० मदनमोहन मालवीय जी की संगमरमर की प्रतिमा की स्थापना हरकी पैड़ी स्थित घण्टाघर टापू पर की गई तथा उसका नाम परिवर्तित कर "मालवीय द्वीप" रखा गया।

(7) हरिद्वार क्षेत्र में मद्य–मांस, नशाबन्दी को लेकर श्री गंगा सभा द्वारा 1928 से छेड़े गये जन आन्दोलन के कारण ही सरकार को विवश होकर हरिद्वार को 1949 में ड्राई एरिया घोषित करना पड़ा। इसके अतिरिक्त हरिद्वार में मछली पकड़ना भी कानूनन वर्जित किया गया

(8) श्री गंगा सभा के अथक प्रयासों से तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए हरिद्वार नगर में रेलवे टिकट घर खुलवाया गया।

(9) श्री गंगा सभा के प्रयास से हरिद्वार के प्रमुख मार्ग अपर रोड़ का नाम सन् 1961 में मालवीय मार्ग स्वीकार किया गया।

(10) सन् 1977 में अखिल भारतीय तीर्थ पुरोहित महासभा का गठन किया गया तथा इसका मुख्य कार्यालय भी श्री गंगा सभा (रजि.) के कार्यालय में ही स्थापित है।

(11) सन् 1978 में हरिद्वार नगर में तीर्थयात्रियों की सुविधार्थ श्री गंगा सभा अतिथि भवन की स्थापना एवं निःशुल्क संचालन

(12) सन् 1985 में श्री लक्ष्मी चन्द पुरोहित धर्मशाला ज्वालापुर की स्थापना तथा सन् 1993 से धर्मशाला का विकास कार्य पूर्ण कर सुचारु संचालन।

(13) श्री गंगा सभा के प्रयास से हिन्दूजा फाउन्डेशन मुम्बई के सहयोग से सन् 1986 में महिला घाटका निर्माण किया गया। जिसका लोकार्पण तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा किया गया।

(14) हरकी पैड़ी स्थित श्री गंगा सभा शाखा कार्यालय का तटवर्ती हवन घाट सन् 1988 में संगमरमर का फर्श लगाकर पुनर्निर्मित किया गया।

(15) हरकी पैड़ी महिला घाट के निकट माँ गंगा मन्दिर का निर्माण श्री गंगा सभा द्वारा कराया गया।

(16) श्री गंगा सभा द्वारा हरकी पैड़ी पर निर्बाध विद्युत आपूर्ति हेतु जनरेटरों की व्यवस्था।

(17) विगत 59 वर्षों से सभा की विद्वत् परिषद द्वारा श्री गंगा तिथि पर्व निर्णय पत्रिका का प्रतिवर्ष प्रकाशन तथा निःशुल्क वितरण किया

जाता है।

(18) सन् 1993 से श्री गंगा सभा द्वारा सार्वजनिक सेवा हेतु एम्बुलेन्स वाहन का सुचारु संचालन किया जा रहा है

(19) सन् 1996 से श्री गंगा सभा द्वारा जनसुविधार्थ निःशुल्क अन्तिम यात्रा वाहन का सुचारु संचालन।

(20) सन् 2000 में कनखल में श्री गंगा सभा धर्मशाला की स्थापना एवं सन् 2013 में धर्मशाला का नया निर्माण कार्य पूर्ण कर सुचारू रूप से संचालन प्रारम्भ।

(21) सन् 2002 में हरकी पैड़ी पर यात्रियों के लिये पानी पीने के वाटर कूलर की व्यवस्था की गई।

(22) माँ गंगा को प्रदूषण मुक्त रखने हेतु श्री गंगा सभा के सुझाव पर सन् 2003 में कांगड़ा पुल से भीमगोडा पुल तक गंगा तट पर सीवर लाईन डालकर घाट का निर्माण किया गया।

(23) सन् 2004 में अर्द्ध कुम्भ के अवसर पर श्री गंगा सभा के प्रयास से कनखल, सती घाट का विस्तार तथा पुल का निर्माण भी किया गया।

(24) सन् 2004 में ही श्री गंगा सभा के सुझाव पर कार्यवाही करते हुए उत्तराखण्ड शासन द्वारा पौराणिक तीर्थ कुशावर्त घाट का विस्तार एवं सौन्दर्यीकरण किया गया।

(25) सन् 2008 में सम्पूर्ण भारत के धर्माचार्यों द्वारा मां गंगा के संरक्षण हेतु छेड़े गये जन आंदोलन में श्री गंगा सभा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस जन आन्दोलन के परिणामस्वरूप ही भारत सरकार द्वारा गंगा नदी को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया गया।

(26) ज्वालापुर मे वर्ष 2010 से श्री मालवीय धाम का निर्माण एवम् निःशुल्क संचालन।

(27) वर्ष 2011 से श्री गंगा सभा (रजि0) द्वारा दैनिक आरती के समय उपस्थित हजारों श्रद्धालु तीर्थयात्रियों को माँ गंगा की निर्मलता बनाये रखने एवम् प्रदूषण मुक्ति हेतु संकल्प कराया जाता है एक अनुमान के अनुसार लगभग एक करोड़ 50 लाख से ज्यादा लोगों को यह संकल्प कराया जा चुका है।

(28) वर्ष 2012 से हर की पौड़ी के सपूर्ण क्षेत्र एवम् मालवीय द्वीप आदि का संपूर्ण रख–रखाव व सफाई व्यवस्था का संचालन।

(29) श्री गंगा सभा द्वारा निरन्तर निःशुल्क पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार, योग साधना एवं योग चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है जिसमें भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन का कार्य सभा द्वारा किया जा रहा है।

(30) श्री गंगा सभा द्वारा देश के दूरस्थ क्षेत्रों तथा विदेशों के हिन्दू धर्मावलम्बियों द्वारा प्रेषित अस्थियों को विधिपूर्वक गंगा जी में प्रवाहित किया जाता है यात्रियों की मांग पर उन्हें घर बैठे निःशुल्क गंगाजल भिजवाया जाता है। असहाय एवं गरीबों को सहायता प्रदान की जाती है। यात्रियों, पर्यटकों को यात्रा से सम्बन्धित वांछित सलाह एवं सहयोग दिया जाता है।

(31) श्री गंगा सभा को कुम्भ एवं अर्द्धकुम्भ सलाहकार समिति, जोनल रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति (*ZRUCC*) हरिद्वार विकास समन्वय समिति, हरिद्वार महोत्सव समिति आदि अनेक शासकीय समितियों में प्रतिनिधित्व प्राप्त होता रहता है। इसके अतिरिक्त

अखिल भारतीय तीर्थ पुरोहित महासभा, उत्तर प्रदेश तीर्थ पुरोहित महासभा, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम कमेटी आदि में स्थाई प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

(32) श्री गंगा सभा के 100 वर्षीय कार्यकाल के सामाजिक, धार्मिक, जन कल्याणकारी कार्यो एवं हरकी पौड़ी की सुव्यवस्था की प्रशंसा विभिन्न धर्माचार्यो, राष्ट्राध्यक्षों, महामहिम राष्ट्रपति, राज्यपालों, उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों, विदेशी राजनयिकों, केन्द्रीय मंत्रियों, राज्यमंत्रियों, राजकीय उच्चाधिकारियों राज नेताओं तथा पत्रकारों द्वारा सैकड़ों पत्रों के माध्यम से की गई है।

(33) केदारनाथ धाम एवं उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में आई दैवीय आपदा से प्रभावित हुये लोगों की सहायता हेतु माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड कोष में सभा द्वारा 5 लाख रू. प्रदान किये गये। हरिद्वार में विभिन्न स्थानों पर सहायता हेतु आपदा पीड़ित यात्रियों के लिए राहत शिविर लगाये गये तथा राहत सामग्री वितरित की गई। दैवीय आपदा के कारण दिवगंत आत्माओं की शान्ति हेतु श्रद्धांजलि सभा, शान्ति पाठ एवं तिल तर्पण कार्यक्रम श्री बद्रीनाथ एवं केदारनाथ मन्दिर समिति तथा श्री गंगा सभा (रजि0) हरिद्वार द्वारा संयुक्त रूप से हर की पौड़ी हरिद्वार में किया गया।

(34) 2,51,000 रूपये की नेपाल में आये भयंकर भूकम्प की त्रासदी में मारे गये लोगों की सहायता के लिए मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड राहत कोष में दान दिए।

(35) श्री गंगा सभा (रजि0) द्वारा समय–समय पर देश की विख्यात हॉस्पिटलों के सहयोग से हरिद्वार में चिकित्सा शिविर एव रक्त दान शिविर लगवाये गये।

श्री गंगा सभा (रजि0) के कतिपय दैनिक कार्य

श्री माँ गंगा अर्चना : प्रतिदिन शास्त्रीय वैदिक पौराणिक विधि से श्री गंगा जी की पूजा–अर्चना व प्रातः एवं सायं भव्य आरती का आयोजन एवम् प्रातः भगवान शिव का प्रतिदिन रूद्राभिषेक लघुरूद्रात्यक एवं सायंकाल श्री गंगा जी का दुग्धाभिषेक विद्वान ब्राह्मणों के द्वारा एवं श्रद्वालुओं को मध्याह्न भोग प्रसाद का वितरण किया जाता है।

धर्म प्रचार : प्रतिदिन विद्वानों द्वारा वेद, उपनिषद्, गीता, पुराण आदि का प्रवचन। समय–समय पर मास महात्म्य, रामायण व पुराण पारायण।

प्राथमिक चिकित्सा कार्य : आहत, रुग्ण, पीड़ित यात्रियों को निःशुल्क प्राथमिक चिकित्सा एवं एम्बूलैन्स संचालन। हर की पौड़ी पर एवं ज्वालापुर कनखल स्थित संस्था की धर्मशालाओं में निःशुल्क प्राथमिक चिकित्सा योग्य चिकित्सकों द्वारा संचालन।

खोया पाया विभाग एवं सूचना प्रसारण केन्द्र : मेलों पर खोये, लापता यात्रियों एवं सामान को उनके सम्बन्धित व्यक्तियों तक पहुंचाना।

वाचनालय : दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र पत्रिकाओं की सुविधा।

गंगा सेवक दल : श्री गंगा सभा के सैकड़ों स्वयं सेवकों द्वारा श्री गंगा जी के घाटों की सफाई का सेवा कार्य।

प्रचार : मद्यनिषेध समाज सुधार, सभा गोष्ठी, जयन्ती आदि का आयोजन एवं विभिन्न सामाजिक, धार्मिक साहित्य का प्रकाशन

तीर्थ पुरोहित महिमा

प्रभावादद्भुताद्भूमेः सलिलस्य च तेजसा।
परिग्रहान्मुनीनां च तीर्थानां पुण्यता स्मृता। स्क0 पु0

दिव्य अलौकिक वातावरण की भूमि, अमृतमय तेजोयुक्त गंगाजल, मननशील तीर्थ पुरोहित–इन तीनों के समन्वित संयोग से तीर्थों में परम पुण्यप्रद फल मिलता है। तीर्थ, तीर्थ यात्री तथा तीर्थ पुरोहित का परस्पर में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। तीर्थ में तीर्थ पुरोहित के सान्निध्य व सदुपदेश मार्ग दर्शन से ही तीर्थ यात्रियों को कायिक, वाचिक, मानसिक शान्ति उपलब्ध हो सकती है।

हिन्दू सनातन धर्म में षोडश संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है, ये संस्कार हमारी अमूल्य सांस्कृतिक निधि हैं। मानव के दोषों को धोकर उसमें श्रद्धा, दया, करूणा, अहिंसा, सत्य आदि गुणों की स्थापना करना और उसके जीवन में सुख, शान्ति, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरुषार्थ को प्रतिष्ठापित करना संस्कारों का लक्ष्य है। इन संस्कारों को आज तक कुल पुरोहितों एवं तीर्थ पुरोहितों ने संजोकर रखा है। पुरोहितों के बिना यजमान, तीर्थ यात्री का कोई कार्य सुसंपन्न नहीं हो सकता। वैदिक काल से लेकर आज तक समाज के समस्त धार्मिक कृत्य, पितृकार्य, देव कार्य, यज्ञ, अनुष्ठान आदि में पुरोहित की उपस्थिति और आशीर्वाद नितान्त अनिवार्य है। इस प्रकार वेद से लेकर ब्रह्म ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण आदि सभी सनातन शास्त्रों में तीर्थ पुरोहितों का यजमान से नित्य सम्बन्ध माना गया है।

आवश्यक निवेदन

1. विश्वख्यिात पौराणिक तीर्थ हरिद्वार की पवित्रता को बनाये रखना प्राणीमात्र की सर्वागीण भलाई तथा सेवा ही हमारा पुनीत कर्तव्य है।
2. गंगा को प्रदूषण से मुक्त रखने में आपका सहयोग अपेक्षित है। गंगा तट पर

लगाना, कुल्ला दातून करना, कपड़े धोना, पोलीथीन, झूठे पत्ते आदि डालना वर्जित है। धार्मिक दृष्टि से भी यह पाप है।

3. बिना पूर्व अनुमति के हर की पौडी क्षेत्र में फोटो लेना वर्जित है।
4. हरिद्वार में मादक वस्तुओं तथा मांस आदि लाना एवं सेवन करना नितान्त वर्जित ही नहीं अपितु पाप है।
5. श्री गंगा सभा की और से हरकी पौड़ी में यात्रियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए सेवक उपलब्ध रहते है। आवश्यकतानुसार उनसे सम्पर्क कर सहयोग प्राप्त कीजिए।
6. श्री गंगा सभा हरिद्वार की ओर से हरकी पौड़ी पर यात्रियों की सुविधार्थ प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र,खोया पाया विभाग, ध्वनि प्रसारण की व्यवस्था निःशुल्क उपलब्ध है।
7. हरकी पौड़ी गंगा तट पर जूता–चप्पल ले जाना वर्जित है। सभा द्वारा निःशुल्क जूता स्टाल सुविधा यात्रियों के लिए उपलब्ध है।
8. प्रत्येक तीर्थयात्री की यात्रा तभी सफल हो सकती है जब आप अपने परम्परागत तीर्थ पुरोहित (पंडाजी) से मिल लेते है।
9. समस्त धार्मिक देव कार्यो पितृ–कार्यो को पूर्ण कराने के लिए अपने तीर्थ पुरोहित से सम्पर्क करें। पुरोहित जी के न मिलने पर श्री गंगा सभा के हर की पौड़ी कार्यालय पर सम्पर्क करें। सभा आपके वास्तविक तीर्थ पुरोहित से सम्पर्क करा देगी।
10. तीर्थो पर आकर सीधे अपने तीर्थ पुरोहितों के स्थान पर जाना चाहिए।

पुरोहित (पंडा जी) आपको बहीखाता दिखलायेंगे जिसमें आपके पुरखों का इतिहास लिखा होगा। यह एक अत्यन्त आवश्यक कार्य है। यह अपने तीर्थ पुरोहित की पहचान है।

11. ब्रह्मकुण्ड हरकी पौड़ी में अस्थिप्रवाह युग–युगान्तर से होता है। कृपया अपने तीर्थ पुरोहितों के द्वारा ही निर्धारित स्थल पर अस्थिप्रवाह कराये।

आगामी योजनायें

1. हरकी पैड़ी पर भव्य गंगाद्वार का निर्माण।
2. श्री लक्ष्मीचन्द्र पुरोहित धर्मशाला ज्वालापुर का जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण।
3. श्री मालवीय धाम ज्वालापुर का उच्चीकरण ।
4. श्री गंगा सभा अतिथि भवन हरिद्वार का जीर्णोद्धार।
5. अशक्त गौ वंश हेतु गौशाला का निर्माण।
6. हरिद्वार तीर्थ के आसपास उपेक्षित तीर्थस्थलों का अनुरक्षण।
7. श्रीगंगा जी की आरती में यात्रियों की संख्या वृद्धि को देखते हुए ग्यारह आरती कर दी गई है।

उपर्युक्त कार्ययोजनाओं को सम्पन्न करने हेतु संस्था को आप श्रद्धालु जनों के सहयोग की आवश्यकता है। जो दानदाता किसी भी योजना में सहयोग अथवा सुझाव देना चाहते है कृपया वह श्री गंगा सभा (रजि0) के कार्यालय में सम्पर्क करने का कष्ट करें। सधन्यवाद

फोनः– 01334–227928 (मुख्य कार्यालय), 01334–227136 (शाखा कार्यालय)

कृष्ण कुमार शर्मा	पुरूषोत्तम शर्मा ''गांधीवादी''	रामकुमार मिश्रा
सभापति	अध्यक्ष	महामंत्री

चैत्र शुक्ल पक्ष, साधारण वि.सं. 2074 28 मार्च 2017 से 11 अप्रैल 2017 तक बसन्त ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	मंगल	29.47	++	++	++	28 मार्च	प्रतिपदा तिथि क्षय, श्री नवसवत्सर आरम्भ, नवरात्र प्रारम्भ
द्वितीया	बुध	26.47	रेवती	11.38	मेष11.38	29	
तृतीया	गुरू	23.45	अश्विनी	9.23	मेष	30	मत्स्य जयन्ती गौरी तृतीया व्रत
चतुर्थी	शुक्र	20.43	भरणी	7.5	वृष 12.31	31	भद्रा 10.13 से 20.43 तक गणेश चतुर्थी
			कृति	28.51	वृष		
पंचमी	शनि	17.51	रोहिणी	26.51	वृष	1 अप्रै.	
षष्ठी	रवि	15.16	मृग	25.11	मिथुन 13.58	2	स्कन्द षष्ठी व्रत
सप्तमी	सोम	13.04	आर्द्रा	23.55	मिथुन	3	भद्रा 13.04 से 24.10 तक
अष्टमी	मंगल	11.19	पुन.	23.10	कर्क17.17	4	दुर्गाष्टमी व्रत, रामनवमी , नवरात्रे समाप्त
नवमी	बुध	10.4	पुष्य	22.49	कर्क	5	
दशमी	गुरू	9.16	आश्ले	22.59	सिंह 22.59	6	भद्रा 21.04 से
एका.	शुक्र	8.58	मघा	23.34	सिंह	7	भद्रा 8.58 तक, कामदा एकादशी (सर्वेषाम)
द्वादशी	शनि	9.4	पू.फा.	24.34	सिंह	8	शनि प्रदोष व्रत
त्रयो.	रवि	9.35	उ.फा.	25.55	कन्या6.53	9	महावीर जयन्ती (जैन)
चतुदर्शी	सोम	10.27	हस्त	27.37	कन्या	10	भद्रा 10.27 से 23.01 तक व्रत पूर्णिमा (चन्द्रोदय 17.00 बजे) सत्यनारायण व्रत
पूर्णिमा	मंगल	11.41	चित्रा	29.39	तुला16.35	11	मन्वादि श्री हनुमान जयंती, चैत्र स्नानदान पूर्णिमा (द0भा0), वैशाख स्नान प्रारम्भ

वैशाख कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.स.2074, 12 अप्रैल 2017 से 26 अप्रैल 2017 तक बसन्त ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	बुध	13.15	स्वा.	0.00	तुला	12	
द्वितीया	गुरू	15.09	स्वा.	8.01	वृश्चि27.59	13	भद्रा 28.13 से, मेष की सक्रान्ति पुण्य काल अगले दिन 8.29 तक, वैशाखी स्नान
तृतीया	शुक्र	17.22	विशा.	10.41	वृश्चिक	14	भद्रा 17.22 तक,श्रीगणेश चतुर्थी (चन्द्रोदय 21.28)
चतुर्थी	शनि	19.47	अनु.	13.35	वृश्चिक	15	
पंचमी	रवि	22.17	ज्ये.	16.35	धनु 16.35	16	
षष्ठी	सोम	24.39	मूल	19.31	धनु	17	भद्रा 24.39 से,
सप्तमी	मंगल	26.41	पू.षा.	22.10	मकर28.46	18	भद्रा 13.44 तक,
अष्टमी	बुध	28.10	उ.षा.	24.20	मकर	19	श्री शीतलाष्टमी
नवमी	गुरू	28.57	श्रवण	25.50	मकर	20	
दशमी	शुक्र	28.05	धनि.	26.34	कुम्भ14.18	21	भद्रा 17.03 से 28.55 तक पंचक आरम्भ 14.18
एका	शनि	28.05	शत.	26.29	कुम्भ	22	वरूथिनी एकादशी (स्मार्त) बल्लभाचार्य जयन्ती
द्वादशी	रवि	26.27	पू.भा.	25.37	मीन19.55	23	वरूथिनी एकादशी (वैष्णव)
त्रयो.	सोम	24.05	उ.भा.	24.03	मीन	24	भद्रा24.05से सोम प्रदोष व्रत मासशिवरात्रि व्रत
चतुर्दशी	मंगल	21.09	रेवती	21.53	मेष 21.53	25	भद्रा 10.41 तक, पंचक समाप्ति 21.53
अमा.	बुध	17.47	अश्वि.	19.18	मेष	26	स्नान दान, देव पितृकार्य अमावस्या

वैशाख शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074, 27 अप्रैल 2017 से 10 मई 2017 तक बसन्त ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	गुरू	14.10	भरणी	16.29	वृष 21.46	27	चन्द्रदर्शन
द्वितीया	शुक्र	10.30	कृति	13.37	वृष	28	श्री परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया चारधाम यात्रा हरिद्वार से प्रारम्भ, शिवाजी जयन्ती
तृतीया	शनि	6.56	रोहिणी	10.54	मिथुन21.39	29	भद्रा 17.15 से 27.40 तक, गणेश चतुर्थी
चतुर्थी	शनि	27.39	+ +	+ +	+ +	+	चतुर्थी तिथि क्षय
पंचमी	रवि	24.49	मृग.	8.30	मिथुन	30	श्री शंकराचार्य जयन्ती
षष्ठी	सोम	22.31	आर्द्रा	6.34	कर्क23.29	1मई	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
			पुन.	29.13			
सप्तमी	मंगल	20.52	पुष्य	28.30	कर्क	2	भद्रा 20.52 से, श्री गंगा सप्तमी
अष्टमी	बुध	19.52	आश्ले	28.26	सिंह 28.26	3	भद्रा 8.17 तक, बगलामुखी जयन्ती
नवमी	गुरू	19.31	मघा.	29.00	सिंह	4	श्री जानकी जयन्ती
दशमी	शुक्र	19.46	पू.फा.	00.00	सिंह	5	
एका.	शनि	20.33	पू.फा.	6.08	कन्या12.29	6	भद्रा 8.06से20.33 तक मोहिनी एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	रवि	21.46	उ.फा.	7.44	कन्या	7	
त्रयो.	सोम	23.19	हस्त	9.43	तुला22.50	8	सोम प्रदोष वक्र
चतु.	मंगल	25.10	चित्रा	12.01	तुला	9	भद्रा 25.10 से नृसिंह जयन्ती
पूर्णिमा	बुध	27.14	स्वाती	14.32	तुला	10	भद्रा 14.10 तक, व्रत स्नान, दान वैशाख पूर्णिमा, श्री बुद्ध पूर्णिमा, श्री कूर्म जय., वैशाख स्नान समाप्त

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 11 मई से 13 मई तक बसन्त ऋतु 4 मई वृष की सक्रांन्ति से 25 मई 2017 ग्रीष्म ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	गुरू	29.28	विशा.	17.16	वृश्चि10.34	11	
द्वितीया	शुक	0.00	अनु.	20.08	वृश्चि	12	
द्वितीया	शनि	7.51	ज्ये.	23.06	धनु 23.06	13	भद्रा 21.03 से
तृतीया	रवि	10.16	मूल	26.04	धनु	14	भद्रा 10.16 तक वृष संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न उपरान्त गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय 22.00
चतुर्थी	सोम	12.38	पू.षा	28.53	धनु	15	
पंचमी	मंगल	14.47	उ.षा.	00.00	मकर11.32	16	
षष्ठी	बुध	16.33	उ.षा.	7.23	मकर	17	भद्रा 16.33 से 29.13 तक
सप्तमी	गुरू	17.45	श्रवण	9.24	कुम्भ22.11	18	पंचक आरम्भ 22.11
अष्टमी	शुक्र	18.13	धनि.	10.46	कुम्भ	19	
नवमी	शनि	17.54	शत	11.23	मीन29.18	20	भद्रा 29.17 से 16.44 तक
दशमी	रवि	16.44	पू.भा.	11.10	मीन	21	
एका.	सोम	14.46	उ.भा.	10.09	मीन	22	अपरा एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	मंगल	12.05	रेवती	8.23	मेष8.23	23	पंचक समाप्ति 8.23 भौम प्रदोष व्रत
त्रयो.	बुध	8.50	अश्वि.	6.01	मेष	24	भद्रा 8.50 से 19.02 तक, महाशिवरात्रि व्रत
			भरणी	27.13			
चतु.	बुध	29.10	+ +	+ +	+ +	++	चतुर्दशी तिथिक्षय
अमा.	गुरू	25.15	कृति	24.09	वृष8.28	25	देवपितृकार्य अमावस्या, बट सावित्री व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.स.2074, 26 मई 2017 से 9 जून 2017 तक ग्रीष्म ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शुक्र	21.19	रोहिणी	21.03	वृष	26	
द्वितीया	शनि	17.32	मृग.	18.05	मिथुन7.32	27	चन्द्रदर्शन
तृतीया	रवि	14.05	आर्द्रा	15.29	मिथुन	28	भद्रा 24.33 से
चतुर्थी	सोम	11.08	पुन.	13.24	कर्क7.59	29	भद्रा 11.08 तक गणेश चतुर्थी
पंचमी	मंगल	8.49	पुष्य	11.56	कर्क	30	
षष्ठी	बुध	7.12	आश्ले	11.12	सिंह11.12	31	
सप्तमी	गुरू	6.21	मघा.	11.13	सिंह	1जून	भद्रा 6.21 से 18.13 तक
अष्टमी	शुक्र	6.16	पू.फा.	11.59	कन्या18.17	2	
नवमी	शनि	6.52	उ.फा.	13.24.	कन्या	3	
दशमी	रवि	8.04	हस्त	15.22	तुला28.31	4	भद्रा 20.51 से श्री गंगादशहरा, हरिद्वार
एका.	सोम	9.44	चित्रा	17.46	तुला	5	भद्रा 9.44 तक, निर्जला एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	मंगल	1.45	स्वा.	20.27	तुला	6	भौम प्रदोष व्रत
त्रयो.	बुध	3.59	विशा.	23.18	वृश्चि16.34	7	
चतु.	गुरू	16.19	अनु.	26.13	वृश्चि	8	भद्रा 16.19से 29.30तक सत्यनारायण व्रत पूर्णिमा
पूर्णिमा	शुक्र	18.40	ज्ये.	29.08	धनु29.08	9	स्नान दान पूर्णिमा, सन्त कबीर जयन्ती

आषाढ कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं.2074 10 जून 2017 से 24 जून 2017 तक ग्रीष्म ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शनि	21.00	मूल	0.00	धनु	10	
द्वितीया	रवि	23.14	मूल	8.01	धनु	11	
तृतीया	सोम	25.17	पू.षा.	10.45	मकर17.25	12	भद्रा 12.17 से 25.17 तक
चतुर्थी	मंगल	27.02	उ.षा.	13.17	मकर	13	श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 22.14 हरिद्वार
पंचमी	बुध	27.02	श्रवण	15.29	कुम्भ28.25	14	पंचक प्रारम्भ 28.25 से,
षष्ठी	गुरू	29.10	धनि.	17.13	कुम्भ	15	भद्रा 29.10 से, मिथुन की संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न 11:26 तक
सप्तमी	शुक्र	29.18	शत.	18.21	कुम्भ	16	भद्रा 17.15 तक
अष्टमी	शनि	28.42	पू.भा.	18.47	मीन12.45	17	
नवमी	रवि	27.20	उ.भा.	18.29	मीन	18	
दशमी	सोम	25.16	रेवती	17.27	मेष17.27	19	भद्रा 14.23 से 25.16 तक, पंचक समाप्ति 17.27 तक
एका.	मंगल	22.23	अश्वि.	15.44	मेष	20	योगिनी एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	बुध	19.17	भरणी	13.27	वृष18.48	21	प्रदोष व्रत
त्रयो.	गुरू	15.40	कृति.	10.45	वृष	22	भद्रा15.40 से 25.47 तक, मास शिवरात्रि व्रत
चतु.	शुक्र	11.52	रोहि.	7.48	मिथुन18.18	23	श्राद्ध की अमावस्या
			मृग.	28.8			
अमा.	शनि	8.02	आर्द्रा	25.57	मिथुन	24	शनिश्चरी अमावस्या,स्नान दान अमावस्या

आषाढ़ शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 25 जून 2017 से 9 जुलाई 2017 तक ग्रीष्म ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शनि	28.23	+	+	+	+	प्रतिपदा तिथि क्षय
द्वितीया	रवि	25.04	पुन.	23.36	कर्क18.01	25	चन्द्र दर्शन, श्री जगन्नाथ रथ महोत्सव
तृतीया	सोम	22.15	पुष्य	21.22	कर्क	26	
चतुर्थी	मंगल	20.04	आश्ले	19.59	सिंह19.59	27	भद्रा 9.05 से 20.04 तक, गणेश चतुर्थी
पंचमी	बुध	18.36	मघा.	19.17	सिंह	28	
षष्ठी	गुरू	17.54	पू.फा.	19.22	कन्या25.30	29	
सप्तमी	शुक्र	18.00	उ.फा.	20.13	कन्या	30	भद्रा 18.00 से, विवस्वत सप्तमी व्रत
अष्टमी	शनि	18.50	हस्त	21.47	कन्या	1जुलाई	भद्रा 6.20 तक
नवमी	रवि	20.18	चित्रा	23.57	तुला10.48	2	
दशमी	सोम	22.16	स्वाति	26.34	तुला	3	
एका.	मंगल	24.32	विशा.	0.00	वृश्चि22.43	4	भद्रा 11.23से24.32 तक हरिशयनी एकादशी (सर्वेषाम)
द्वादशी	बुध	26.56	विशा.	5.27	वृश्चि	5	
त्रयो.	गुरू	29.19	अनु.	8.26	वृश्चि	6	प्रदोष व्रत
चतु.	शुक्र	0.00	ज्येष्ठा	11.22	धनु11.22	7	
चतु.	शनि	7.34	मूल	14.09	धनु	8	भद्रा 7.34 से 20.37 तक, सत्यव्रत पूर्णिमा
पूर्णिमा	रवि	9.36	पू.षा.	16.44	मकर23.21	9	स्नानदान आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजन

श्रावण कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं.2074 10 जुलाई 2017 से 15 जुलाई 2017 तक ग्रीष्म ऋतु रवि उत्तरायण एवं 16 जुलाई कर्क की संक्रान्ति से 23 जुलाई 2017 वर्षा ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	सोम	11.24	उ.षा.	19.04	मकर	10	कांवड यात्रा प्रारम्भ
द्वितीया	मंगल	12.54	श्रवण	21.06	मकर	11	भद्रा 25.31 से
तृतीया	बुध	14.02	धनि.	22.46	कुम्भ9.59	12	भद्रा 14.02 तक पंचक आरम्भ 9.59 श्री गणेश चतुर्थी (चन्द्र दर्शन 21.35 हरिद्वार
चतुर्थी	गुरू	14.46	शत.	23.59	कुम्भ	13	
पंचमी	शुक्र	14.59	पू.भा.	24.42	मीन18.34	14	नागपंचमी
षष्ठी	शनि	14.39	उ.भा.	24.50	मीन	15	भद्रा 14.39 से 26.00 तक
सप्तमी	रवि	13.42	रेवती	24.23	मेष24.23	16	पंचक समाप्ति 24.23 तक कर्क की संक्रान्ति पुण्यकाल पुर्वदिन 9.43 से
अष्टमी	सोम	12.10	अश्वि.	23.20	मेष	17	
नवमी	मंगल	10.04	भरणी	21.46	वृष27.18	18	भद्रा 20.45 से
दशमी	बुध	7.29	कृति.	19.45	वृष	19	भद्रा 7.29 तक, कामिका एकादशी व्रत (स्मार्त)
एका.	बुध	28.29	++	++	++	++	एकादशी तिथिक्षय
द्वादशी	गुरू	25.14	रोहि.	17.24	मिथुन28.09	20	कामिका एकादशी व्रत (वैष्णव)
त्रयो.	शुक्र	21.51	मृग	14.53	मिथुन	21	भद्रा 21.51 से, मासशिवरात्रि व्रत, प्रदोष व्रत
चतु.	शनि	18.30	आर्द्रा	12.19	कर्क28.29	22	भद्रा 8.10 तक
अमाव.	रवि	15.19	पुर्न.	9.54	कर्क	23	श्राद्ध अमावस्या, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयन्ती

श्रावण शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 24 जुलाई 2017 से 7 अगस्त 2017 तक वर्षा ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घ.मि.	नक्षत्र	घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	सोम	12.27	पुश्य	7.45	कर्क	24	चन्द्रदर्शन
द्वितीया	मंगल	10.02	आश्ले	6.02	सिंह6.02	25	सिंधारा
			मघा.	28.53			
तृतीया	बुध	8.12	पू.फा.	28.24	सिंह	26	भद्रा 19.33 से, तिजो
चतुर्थी	गुरू	7.03	उ.फा.	28.38	कन्या10.23	27	भद्रा 7.03 तक, नाग पंचमी व्रत
पंचमी	शुक्र	6.38	हस्त	29.36	कन्या	28	कल्कि जयन्ती, श्रावणी उपाकर्म
षष्ठी	शनि	6.59	चित्रा	0.00	तुला18.26	29	
सप्तमी	रवि	8.03	चित्रा	7.18	तुला	30	भद्रा 8.05 से 20.54 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती अचला सप्तमी
अष्टमी	सोम	9.45	स्वाति	9.36	वृश्चि29.37	31	
नवमी	मंगल	11.54	विषा.	12.20	वृश्चि	1अगस्त	
दशमी	बुध	14.18	अनु.	15.18	वृश्चि	2	भद्रा 27.31 से
एका.	गुरू	16.43	ज्ये.	18.16	धनु18.16	3	भद्रा 16.43 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	शुक्र	18.57	मूल.	21.04	धनु	4	
त्रयो.	शनि	20.54	पू.षा.	23.35	धनु	5	शनि प्रदोष व्रत
चतु.	रवि	22.28	उ.षा.	25.43	मकर	6	भद्रा 22.28 से
पूर्णिमा	सोम	23.38	श्रवण	27.28	मकर	7	भद्रा 11.06 तक, व्रत स्नान दान श्रावणी पूर्णिमा, सत्यव्रत पूर्णिमा, रक्षा बन्धन भद्रा के बाद 11.6 चन्द्र ग्रहण भारत में दृश्य, स्पर्ष–10.44 रात्रि मध्य, 11.43 रात्रि मध्य, मोक्ष–12.43 रात्रि पर्व काल 1 घण्टा 59 मिनट

भाद्रपक्ष कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 8 अगस्त 2017 से 21 अगस्त 2017 तक वर्षा ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	मंगल	24.23	धनि.	28.50	कुम्भ16.12	8	पंचक प्रारम्भ 16.12
द्वितीया	बुध	24.42	शत.	29.43	कुम्भ	9	
तृतीया	गुरू	24.35	पू.भा.	00.10	मीन 24.08	10	भद्रा 12.41 से 24.35 तक, बूढ़ी तीज व्रत
चतुर्थी	शुक्र	24.01	पू.भा.	6.12	मीन	11	गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 21.29) हरिद्वार
पंचमी	शुक्र	6.38	उ.भा.	6.16	मीन	12	पंचक समाप्ति 29.54
षष्ठी	रवि	21.29	रेवती	29.36	मेष29.54	13	भद्रा 21.38 से, चन्दन षष्ठी (चन्द्रोदय 22:56)
			अश्वि	29.7			
सप्तमी	सोम	19.50	भरणी	27.59	मेष	14	भद्रा8.42 तक, श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)
अष्टमी	मंगल	17.43	कृति.	26.32	वृष9.39	15	श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)
नवमी	बुध	15.19	रोहि.	24.50	वृष	16	भद्रा 26.03 से, सिंह की संक्रान्ति पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 7:10 तक, गोगा नवमी
दशमी	गुरू	12.44	मृग.	22.58	मिथुन11.55	17	भद्रा 12.44तक
एका.	शुक्र	10.02	आर्द्रा	21.02	मिथुन	18	अजा एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	शनि	7.18	पुन.	19.08	कर्क13.36	19	भद्रा 28.40 से, शनि प्रदोष व्रत
त्रयो.	शनि	28.40	++	++	++	+	त्रयोदशीतिथि क्षय
चतु.	रवि	26.13	पुष्य	17.23	कर्क	20	भद्रा 15.25 तक, महाशिवरात्रि व्रत
अमा.	सोम	24.04	आश्ले	15.53	सिंह15.53	21	सोमवती कृष ग्रहणी अमावस्या

भाद्रपद शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 22 अगस्त 2017 से 6 सितम्बर 2017 तक वर्षा ऋतु, रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	मंगल	22.19	मघा	14.45	सिंह	22	
द्वितीया	बुध	21.05	पू.फा.	14.05	कन्या20.01	23	चन्द्र दर्शन
तृतीया	गुरू	20.27	उ.फा.	14.00	कन्या	24	गौरी तृतीया व्रत, हरितालिका व्रत, वराह जयन्ती
चतुर्थी	शुक्र	20.30	हस्त	14.33	तुला27.04	25	भद्रा18.23से 20.30 तक गणेश चतुर्थी चन्द्र दर्शन निषेध, सामवेदी उपाकर्म
पंचमी	शनि	21.13	चित्रा	15.46	तुला	26	ऋषि पंचमी व्रत
षष्ठी	रवि	22.37	स्वाती	17.39	तुला	27	सूर्य षष्ठी व्रत
सप्तमी	सोम	24.34	विशा.	20.05	वृश्चि13.26	28	भद्रा 24.34 से, सन्तान सप्तमी
अष्टमी	मंगल	26.53	अनु.	22.55	वृश्चि	29	भद्रा 13.42 तक, राधाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी व्रत प्रार.
नवमी	बुध	29.21	ज्ये.	25.55	धनु25.55	30	श्री चन्द्र नवमी व्रतोत्सव
दशमी	गुरू	0.00	मूल.	28.50	धनु	31	गुघाल मेला कनखल
दशमी	शुक्र	7.42	पू.षा.	40.00	धनु	1सित.	भद्रा 20.45 से
एका.	शनि	9.42	पू.षा.	7.27	मकर14.02	2	भद्रा 9.42 तक पद्मा एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	रवि	11.15	उ.षा.	9.37	मकर	3	प्रदोष व्रत गुघाल मेला ज्वालापुर, वामन द्वादशी
त्रयो.	सोम	12.13	श्रवण	11.15	कुम्भ23.52	4	पंचक प्रारम्भ 23.52 से
चतु.	मंगल	12.38	धनि.	12.20	कुम्भ	5	भद्रा 12.38 से 24.38 तक, व्रत पूर्णिमा, अनन्त चतुर्दशी पूर्णिमा, श्राद्ध, पितृ श्राद्ध
पूर्णिमा	बुध	13.30	शत	12.53	कुम्भ	6	स्नान दान पूर्णिमा, प्रतिपदा श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074, 7 सितम्बर 2017 से 15 सितम्बर 2017 तक वर्षा ऋतु एवं 16 सितम्बर से कन्या की संक्रान्ति से 20 सितम्बर 2017 शरद ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घ.मि.	नक्षत्र	घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	गुरू	11.52	पू.भा.	12.55	मीन6.57	7	द्वितीया श्राद्ध
द्वितीया	शुक्र	10.45	उ.भा.	12.30	मीन	8	भद्रा 22.03 से तृतीया श्राद्ध
तृतीया	शनि	9.16	रेवती	11.44	मेष11.44	9	भद्रा9.16 तक, पंचक समाप्ति 11.44 गणेश चतुर्थी,चतुर्थी श्राद्ध (चन्द्रोदय 20.44) हरिद्वार
चतुर्थी	रवि	7.28	अश्वि	10.39	मेष	10	पंचमी श्राद्ध
पंचमी	रवि	29.27	++	++	++	+	पंचमी तिथि क्षय
षष्ठी	सोम	27.17	भरणी	9.22	वृष15.01	11	भद्रा 27.17 से, षष्ठी श्राद्ध
सप्तमी	मंगल	25.03	कृति.	7.56	वृष	12	भद्रा 14.10 तक, सप्तमी श्राद्ध
अष्टमी	बुध	22.48	रोहि. मृग.	6.28 28.59	मिथुन17.43	13	अष्टमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत समाप्त
नवमी	गुरू	20.36	आर्द्रा	27.33	मिथुन	14	नवमी श्राद्ध (सौभाग्वती स्त्रियों का श्राद्ध)मातृनवमी
दशमी	शुक्र	18.29	पुष्य	26.14	कर्क20.33	15	भद्रा 7.32 से 18.29 तक, दशमी श्राद्ध
एका.	शनि	16.31	पुष्य	25.04	कर्क	16	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध, कन्या संक्रान्ति पुण्यकाल अगले दिन 7:03 तक
द्वादशी	रवि	14.43	आश्ले	24.06	सिंह24.06	17	द्वादशी/त्रयोदशी श्राद्धप्रदोष व्रत, विश्वकर्मा पूजन
त्रयो.	सोम	13.10	मघा	23.24	सिंह	18	भद्रा 13.10 से 24.30 तक, चतुर्दशी श्राद्ध, मासशिवरात्रि
चतु.	मंगल	11.55	पू.फा.	23.01	कन्या28.59	19	पितृकार्य अमा., सर्वपितृश्राद्ध पितृविर्सजन अमा.
अमा.	बुध	11.05	उ.फा.	23.03	कन्या	20	देवकार्य अमावस्या माता मह श्राद्ध (नाना–नानी का श्राद्ध)

आश्विन शुक्ल पक्ष, साधारण वि.सं. 2074 21 सितम्बर 2017 से 5 अक्टूबर 2017 तक, शरद ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	गुरू	10.36	हस्त	23.32	कन्या	21	श्री शारदीय नवरात्रारम्भ, अभिजित मूहूत 11.44 से 12.29 तक, अग्रसेन जयन्ती
द्वितीया	शुक्र	10.41	चित्रा	24.34	तुला24.34	22	
तृतीया	शनि	11.20	स्वा.	26.11	तुला	23	भद्रा 23.54 से
चतुर्थी	रवि	12.35	विशा.	28.20	वृश्चि21.45	24	भद्रा 12.35 तक
पंचमी	सोम	14.23	अनु.	0.00	वृश्चि	25	
षष्ठी	मंगल	16.39	अनु.	6.58	वृश्चि	26	कालरात्रि पूजन (अर्द्धरात्रि में)
सप्तमी	बुध	19.09	ज्ये.	9.56	धनु9.56	27	भद्रा 19.09 से, सरस्वती आवाहन
अष्टमी	गुरू	21.39	मूल	12.58	धनु	28	भद्रा 8.25 तक, सरस्वती पूजन, श्री दुर्गाष्टमी, शहीद भगत सिंह जयन्ती
नवमी	शुक्र	23.53	पू.षा.	15.49	मकर22.29	29	महानवमी भद्रकाली नवमी
दशमी	शनि	25.38	उ.षा.	18.17	मकर	30	विजयादशमी (दशहरा)सरस्वती विसर्जन, अपराजिता देवी पूजन
एका.	रवि	26.44	श्रवण	20.09	मकर	1अक्टू	भद्रा 14.17 से 26.44 तक, पापंकुशा एकादशी व्रत
द्वादशी	सोम	27.08	धनि.	21.20	कुम्भ8.50	2	पापंकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव) पंचक आरम्भ 8.50 श्री लाल बहादुर शास्त्री जयंती, श्री महात्मा गांधी जयंती
त्रयो.	मंगल	26.47	शत	21.49	कुम्भ	3	भौम प्रदोष व्रत
चतु.	बुध	25.46	पू.भा	21.37	मीन15.43	4	भद्रा 25.46 से, चण्डी चौदस,मेला शाकुम्भरी देवी
पूर्णिमा	गुरू	24.09	उ.भा.	20.48	मीन	5	भद्रा 13.02 तक, व्रत स्नान दान, पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा सत्यनारायण व्रत, बाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ

कार्तिक कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074, 6 अक्टूबर से 2017 19 अक्टूबर 2017 तक शरद ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शुक्र	22.04	रेवती	19.36	मेष19.30	6	पंचक समाप्ति 19.30 तक
द्वितीया	शनि	19.38	अश्वि.	17.51	मेष	7	
तृतीया	रवि	16.59	भरणी	15.58	वृष21.29	8	भद्रा 6.19 से 16.59 तक, करवा चतुर्थी, श्री गणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय 8.08 रात्रि, हरिद्वार
चतुर्थी	सोम	14.17	कृति	14.01	वृष	9	
पंचमी	मंगल	11.37	रोहि.	12.07	मिथुन23.14	10	बृहस्पति अस्त
षष्ठी	बुध	9.09	मृग	10.23	मिथुन	11	भद्रा 9.09 से 19.59 तक
सप्तमी	गुरू	6.54	आर्द्रा	8.54	कर्क25.59	12	अहोई अष्टमी व्रत
अष्टमी	गुरू	28.58	++	++	++	+	अष्टमी तिथि क्षय
नवमी	शुक्र	27.20	पुन.	7.43	कर्क	13	
दशमी	शनि	26.02	पुष्य	6.49	सिंह30.18	14	भद्रा 14.39 से 26.02 तक
			आश्ले	30.18	सिंह		
एका.	रवि	25.04	मघा	30.05	सिंह	15	रमा एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	सोम	24.26	पू.फा.	30.14	सिंह	16	गोवत्स द्वादशी व्रत
त्रयो.	मंगल	24.09	उ.फा.	0.00	कन्या12.15	17	भद्रा 24.09 से प्रदोष व्रत, तुला संक्रान्ति, पुण्यकाल सूर्यादय उपरान्त सारा दिन, व्रत यमदीप दान, धनतेरस
चतु.	बुध	24.13	उ.फा.	6.37	कन्या	18	भद्रा 12.08 तक, मासशिवरात्रि व्रत, नरक चतुर्दशी, हनुमान जयन्ती (उ0भा0)
अमा.	गुरू	24.42	हस्त	7.25	तुला19.58	19	दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, देवपितृकार्य अमा.

कार्तिक शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 20 अक्टूबर 2017 से 4 नवम्बर 2017 तक शरद ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शुक्र	25.36	चित्रा	8.37	तुला	20	गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट
द्वितीया	शनि	26.58	स्वा.	10.15	वृश्चि29.46	21	चन्द्रदर्शन, यम द्वितीया (भैय्यादूज)
तृतीया	रवि	28.49	विशा.	12.19	वृश्चि	22	
चतुर्थी	सोम	0.00	अनु.	14.49	वृश्चि	23	भद्रा 17.53 से
चतुर्थी	मंगल	7.03	ज्ये.	17.41	धनु17.41	24	भद्रा 7.03 तक
पंचमी	बुध	9.36	मूल	20.45	धनु	25	ज्ञान पंचमी (जैन)
षष्ठी	गुरू	12.15	पू.षा.	23.50	मकर30.35	26	सूर्य षष्ठी व्रत(छठ पूजा बिहार) स्कन्ध षष्ठी
सप्तमी	शुक्र	14.45	उ.षा.	26.40	मकर	27	भद्रा 14.45 से 27.52 तक
अष्टमी	शनि	16.51	श्रवण	29.02	मकर	28	गोपालष्टमी व्रत
नवमी	रवि	18.20	धनि	0.00	कुम्भ17.57	29	पंचक प्रारम्भ 17.57 ,अक्षय नवमी
दशमी	सोम	19.03	धनि	6.42	कुम्भ	30	
एका.	मंगल	18.55	शत	7.35	मीन25.42	31	भद्रा 7.05से 18.55 तक,हरिप्रबोधनी एका. व्रत सरदार बल्लभभाई पटेल जय.,भीष्म पंचक प्रार.
द्वादशी	बुध	17.56	पू.भा.	7.39	मीन	1नवम्बर	प्रदोष व्रत, तुलसी विवाह
त्रयो.	गुरू	16.11	उ.भा. रेवती	6.54 29.28	मेष29.28	2	पंचक समाप्ति 29.28 बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत
चतु.	शुक्र	13.47	अश्वि.	27.28	मेष	3	भद्रा 13.47 से 24.24 तक, व्रत पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत
पूर्णिमा	शनि	10.53	भरणी	25.05	वृष30.27	4	स्नानदान कार्तिक पूर्णिमा, भीष्म पंचक समाप्ति, गुरूनानक जयन्ती, देव दीपावली

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 5 नवम्बर 2017 से 15 नवम्बर 2017 तक शरद ऋतु एवं 16 नवम्बर 2017 वृश्चिक संक्रान्ति से हेमन्त ऋतु 18 नवम्बर 2017 रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	रवि	7.40	कृति.	22.30	वृष	5	
द्वितीया	रवि	28.18	+	+	+	+	द्वितीया तिथि क्षय
तृतीया	सोम	24.59	रोहि	19.54	वृष	6	भद्रा 14.37 से 24.59 तक
चतुर्थी	मंगल	21.59	मृग	17.28	मिथुन6.39	7	श्री अंगारकी चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय20.37) हरिद्वार गणेश चतुर्थी, बृहस्पति उदय पूर्व में 10.10
पंचमी	बुध	19.03	आर्द्रा	15.20	मिथुन	8	
षष्ठी	गुरू	16.41	पुन.	13.37	कर्क8.00	9	भद्रा 16.41 से 27.41 तक
सप्तमी	शुक्र	14.49	पुष्य	12.23	कर्क	10	कालाष्टमी व्रत श्री भैरवाष्टमी
अष्टमी	शनि	13.30	आश्ले	11.41	सिंह11.41	11	
नवमी	रवि	12.41	मघा	11.30	सिंह	12	भद्रा 24.29 से, पं मदनमोहन मालवीय निर्वाण दिवस
दशमी	सोम	12.24	पू.फा.	11.48	कन्या 17.57	13	भद्रा 12.24 तक
एका.	मंगल	12.34	उ.फा.	12.33	कन्या	14	उत्पन्ना एकादशी (सर्वेषाम), बाल दिवस
द्वादशी	बुध	13.09	हस्त	13.43	तुला26.26	15	प्रदोष व्रत
त्रयो.	गुरू	14.08	चित्रा	15.15	तुला	16	भद्रा 14.08 से 26.46 तक, वृश्चिक की संक्राति पुण्यकाल सूर्यादय उपरान्त सारादिन महाशिवरात्रि व्रत
चतु.	शुक्र	15.30	स्वा.	17.09	तुला	17	
अमा.	शनि	17.12	विषा.	19.23	वृश्चि12.48	18	देव पितृ कार्य अमावस्या, श्री बाला जी जयन्ती

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, साधारण वि.सं. 2074 19 नवम्बर 2017 से 3 दिसम्बर 2017 तक हेमन्त ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	रवि	19.15	अनु	21.45	वृश्चि.	19	
द्वितीया	सोम	21.35	ज्ये.	24.45	धनु 24.45	20	चन्द्रदर्शन
तृतीया	मंगल	24.10	मूल	27.47	धनु	21	
चतुर्थी	बुध	26.52	पू.षा.	0.00	धनु	22	भद्रा 13.30 से 26.52 तक
पंचमी	गुरू	29.31	पू.षा.	6.55	मकर13.42	23	रामजानकी विवाह
षष्ठी	शुक्र	0.00	उ.षा.	9.58	मकर	24	
षष्ठी	शनि	7.55	श्रवण	12.45	कुम्भ25.57	25	पंचक आरम्भ 25.57
सप्तमी	रवि	9.49	धनि	15.01	कुम्भ	26	भद्रा 9.49 से 22.31 तक
अष्टमी	सोम	11.01	शत	16.34	कुम्भ	27	
नवमी	मंगल	11.23	पू.भा.	17.19	मीन11.13	28	
दशमी	बुध	10.51	उ.भा.	17.10	मीन	29	भद्रा 22.15 से
एका.	गुरू	9.26	रेवती	16.11	मेष16.11	30	भद्रा 9.26 तक, पंचक समाप्ति 16.19 मोक्षदा एकादशी (सर्वेषाम), गीता जयन्ती
द्वादशी	शुक्र	7.13	अश्वि	14.27	मेष	1दिसम्ब.	प्रदोष व्रत
त्रयो.	शुक्र	28.20	+ +	+ +	+ +	+	त्रयोदशी तिथिक्षय
चतु.	शनि	24.58	भरणी	12.06	वृष17.26	2	भद्रा 24.58 से शिव चतुर्दशी व्रत
पूर्णिमा	रवि	21.17	कृति	9.20	वृष	3	भद्रा 11.08 तक, व्रत स्नान पूर्णिमा श्री सत्यनारायण व्रत दत्तात्रेय जयन्ती
			रोहि.	30.20			

पौष कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं.2074 4 दिसम्बर 2017 से 18 दिसम्बर 2017 तक हेमन्तु ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	सोम	17.30	मृग	27.19	मिथुन16.49	4	
द्वितीया	मंगल	13.48	आर्द्रा	24.28	मिथुन	5	भद्रा 24.01 से
तृतीया	बुध	10.20	पुन	21.57	कर्क16.32	6	भद्रा10.20 तक,श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय20.25
चतुर्थी	गुरू	7.18	पुष्य	19.55	कर्क	7	
पंचमी	गुरू	28.47	+ +	+ +	+	+	पंचमी तिथिक्षय
षष्ठी	शुक्र	26.54	आश्ले	18.28	सिहं 18.28	8	भद्रा 26.54 से
सप्तमी	शनि	25.42	मघा	17.40	सिंह	9	भद्रा 14.13 तक
अष्टमी	रवि	25.12	पू.फा.	17.33	कन्या23.38	10	भारतरत्न श्री पं. मदनमोहन मालवीय जय.(तिथि)
नवमी	सोम	25.21	उ.फा.	18.06	कन्या	11	
दशमी	मंगल	26.06	हस्त	19.14	कन्या	12	भद्रा 13.39 से 26.06 तक
एका.	बुध	27.24	चित्रा	20.55	तुला8.01	13	सफला एकादशी (सर्वेषाम)
द्वादशी	गुरू	29.08	स्वा.	23.02	तुला	14	
त्रयो.	शुक्र	0.00	विशा.	25.29	वृश्चि18.51	15	शुक्र अस्त, प्रदोष व्रत धनु की संक्रान्ति पुण्यकाल प्रातः 9:24 तक
त्रयो.	शनि	7.12	अनु.	28.12	वृश्चि	16	भद्रा 7.12 से 20.20 तक, मास शिवरात्रि
चतु.	रवि	9.31	ज्ये.	31.06	धनु31.06	17	पितृकार्य अमावस्या
अमा.	सोम	12.02	मूल	0.00	धनु	18	देवकार्य अमावस्या, सोमवती अमावस्या

पौष शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 19 दिसम्बर 2017 से 2 जनवरी 2018 तक हेमन्त ऋतु रवि दक्षिणायन

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	मंगल	14.38	मूल	10.07	धनु	19	चन्द्रोदय प्रातः 7.40,
द्वितीया	बुध	17.18	पू.षा.	13.11	मकर19.57	20	
तृतीया	गुरू	19.54	उ.षा.	16.13	मकर	21	
चतुर्थी	शुक्र	22.20	श्रवण	19.05	मकर	22	भद्रा 9.09 से 22.19 तक
पंचमी	शनि	24.22	धनि	21.39	कुम्भ8.25	23	पंचक आरम्भ 8.25
षष्ठी	रवि	25.54	शत	23.42	कुम्भ	24	
सप्तमी	सोम	26.43	पू.भा.	25.07	मीन18.50	25	भद्रा 26.43से क्रिस्मस(बड़ा दिन) श्री गुरू गोबिन्द सिंह जय. ,भारत रत्न पं. मदन मोहन मालवीय जय.
अष्टमी	मंगल	26.45	उ.भा.	25.46	मीन	26	भद्रा 14.50 तक
नवमी	बुध	25.56	रेवती	25.36	मेष25.36	27	पंचक समाप्ति 25.36
दशमी	गुरू	24.17	अश्वि	24.37	मेष	28	
एका.	शुक्र	21.54	भरणी	22.54	वृष28.22	29	भद्रा 11.11 से 21.54 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत
द्वादशी	शनि	18.54	कृति	20.35	वृष	30	शनि प्रदोष व्रत
त्रयो.	रवि	15.27	रोहि.	17.51	मिथुन28.22	31	
चतु.	सोम	11.43	मृग	14.50	मिथुन	1जन.	भद्रा11.43से 21.49 तक सत्यनारायण व्रत पूर्णिमा
पूर्णिमा	मंगल	7.54	आर्द्रा	11.46	कर्क27.32	2	स्नान दान पौषी पूर्णिमा माघ मेला स्नान प्रारम्भ, शाकुम्बरी देवी जयन्ती

माघ कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 3 जनवरी 2018 से 13 जनवरी 2018 तक हेमन्त ऋतु एवं 14 जनवरी 2018 मकर संक्रान्ति से 17 जनवरी 2018 शिशिर ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	मंगल	28.10	+ +	++	+ +	+ +	प्रतिपदा तिथि क्षय
द्वितीया	बुध	24.41	पुन.	8.49	कर्क	3	
			पुष्य	30.09			
तृतीया	गुरू	21.36	आश्ले	27.56	सिंह27.56	4	भद्रा 11.05 से 21.36 तक
चतुर्थी	शुक्र	19.05	मघा	26.18	सिंह	5	सकट चौथ गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय21.15)
पंचमी	शनि	17.13	पु.फा.	25.21	कन्या31.13	6	
षष्ठी	रवि	16.06	उ.फा.	25.09	कन्या	7	भद्रा 16.06 से 27.51 तक
सप्तमी	सोम	15.46	हस्त	25.43	कन्या	8	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
अष्टमी	मंगल	16.14	चित्रा	27.01	तुला14.17	9	
नवमी	बुध	17.25	स्वाति	28.58	तुला	10	भद्रा 30.14 से
दशमी	गुरू	19.11	विशा	0.00	वृश्चि24.46	11	भद्रा 19.11 तक
एका.	शुक्र	21.25	विशा	7.26	वृश्चि	12	षटतिला एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	शनि	23.56	अनु	10.15	वृश्चि	13	लोहड़ी
त्रयो.	रवि	26.35	ज्ये.	13.15	धनु13.15	14	भद्रा26.35 से प्रदोष व्रत, मकर संक्रान्ति पुण्यकाल सूर्यादय उपरान्त सारा दिन
चतु.	सोम	29.13	मूल	16.19	धुन	15	भद्रा 15.55 तक, महाशिवरात्रि
अमाव.	मंगल	0.00	पू.षा.	19.20	मकर26.05	16	पितृकार्य अमावस्या, मौनी अमावस्या
अमा.	बुध	7.46	उ.षा.	22.14	मकर	17	अमावस्या स्नान दान विशेष पर्व

माघ शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 18 जनवरी 2018 से 31 जनवरी 2018 तक शिशिर ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	गुरू	10.09	श्रवण	24.56	मकर	18	श्री बल्लभाचार्य जय.,शिशिर गुप्त नवरात्रे प्रार.
द्वितीया	शुक्र	12.19	धनि	27.23	कुम्भ 14.12	19	पचंक आरम्भ 14.12
तृतीया	शनि	14.09	शत	29.28	कुम्भ	20	भद्रा 26.55 से, गौरी तृतीया
चतुर्थी	रवि	15.34	पू.भा.	31.05	मीन24.44	21	भद्रा 15.34 तक, वैनायकी चतुर्थी व्रत
पंचमी	सोम	16.27	उ.भा.	0.00	मीन	22	बसन्तपंचमी (श्री पंचमी) श्री सरस्वती पूजन
षष्ठी	मंगल	16.44	उ.भा.	8.09	मीन	23	नेताजी सुभाषचन्द बोस जयन्ती
सप्तमी	बुध	16.21	रेवती	8.35	मेष8.35	24	भद्रा16.21 से 27.54 तक, पंचक समाप्ति 8.35 आरोग्य सप्तमी
अष्टमी	गुरू	15.17	अश्वि.	8.22	मेष	25	भीष्माष्टमी व्रत
नवमी	शुक्र	13.34	भरणी कृति	7.30 30.01	वृष13.11	26	गणतन्त्र दिवस
दशमी	शनि	11.15	रोहि.	28.02	वृष	27	भद्रा 21.54 से जया एकादशी व्रत (स्मार्त)
एका.	रवि	8.27	मृग	25.31	मिथुन14.53	28	भद्रा8.27 तक, जया एका. व्रत,(वैष्णव)भीष्म द्वादशी
द्वादशी	रवि	29.17	+	+	+	+	द्वादशी तिथिक्षय
त्रयो.	सोम	25.53	आर्द्रा	23.03	मिथुन	29	सोम प्रदोष व्रत
चतु.	मंगल	22.24	पुन.	20.16	कर्क14.58	30	भद्रा.22.24से
पूर्णिमा	बुध	18.59	पुष्य	17.35	कर्क	31	भद्रा 8.40 तक, व्रत स्नान दान माघ पूर्णिमा चन्द्रग्रहण भारतीय समय 5.19 सायं से 8.43 बजे सायं के मध्य दिखाई देगा भारत में जहां चन्द्रोदय सायं 5.19 सायं से पहले होगा।वहां सम्पूर्ण खग्रास चन्द्र ग्रहण दिखाई देगा। हरिद्वार में चन्द्रोदय 5.46 सायं होगा, रविदास जयंती

फाल्गुन कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 1 फरवरी 2018 से 15 फरवरी 2018 तक, शिशिर ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	गुरू	15.47	आश्ले	15.07	सिंह15.07	1फरवरी	
द्वितीया	शुक्र	12.58	मघा	13.01	सिंह	2	भद्रा 23.45 से, शुक्र उदय
तृतीया	शनि	10.40	पू.फा.	11.25	कन्या17.07	3	भद्रा 10.40 तक,श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 21.18
चतुर्थी	रवि	9.01	उ.फा.	10.28	कन्या	4	
पंचमी	सोम	8.07	हस्त	10.15	तुला 22.27	5	
षष्ठी	मंगल	8.01	चित्रा	10.50	तुला	6	भद्रा 8.01 से 20.16 तक
सप्तमी	बुध	8.45	स्वा.	12.12	तुला	7	
अष्टमी	गुरू	10.13	विशा	14.17	वृश्चि7.42	8	
नवमी	शुक्र	12.19	अनु.	16.55	वृश्चि	9	भद्रा 25.32 से
दशमी	शनि	14.49	ज्ये.	19.54	धनु19.54	10	भद्रा 14.49 तक
एका.	रवि	17.31	मूल	23.01	धनु	11	विजया एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	सोम	20.10	पू.षा.	26.05	धनु	12	कुम्भ की संक्रान्ति पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 9:11 तक
त्रयो.	मंगल	22.37	उ.षा.	28.55	मकर8.49	13	भद्रा 22.37 से भौम प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि (प्रहर पूजा आरम्भ) श्री शिवरात्रि व्रत
चतु.	बुध	24.47	श्रवण	0.00	मकर	14	भद्रा 11.44 तक
अमा.	गुरू	26.34	श्रवण	7.27	कुम्भ20.35	15	अमावस्या पंचकारम्भ 20.35

फाल्गुन शुक्ल पक्ष, साधारण, वि.सं.2074 16 फरवरी 2018 से 1 मार्च 2018 तक शिशिर ऋतु रवि उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शुक्र	27.56	धनि	9.38	कुम्भ	16	
द्वितीया	शनि	28.52	शत	11.24	मीन30.28	17	फूलेरा दूज, श्री राम कृष्ण परमहंस जयन्ती
तृतीया	रवि	29.21	पू.भा.	12.45	मीन	18	
चतुर्थी	सोम	29.21	उ.भा.	13.39	मीन	19	भद्रा 17.20 से 29.18 तक मनोरथ चतुर्थी व्रत
पंचमी	मंगल	28.50	रेवती	14.06	मेष14.06	20	पंचक समाप्ति 14.06
षष्ठी	बुध	27.57	अश्वि	14.05	मेष	21	
सप्तमी	गुरू	26.34	भरणी	13.37	वृष19.26	22	भद्रा 26.34 से
अष्टमी	शुक्र	24.47	कृति	12.44	वृष	23	भद्रा 13.43 तक (होलाष्टक प्रारम्भ)
नवमी	शनि	22.38	रोहि.	11.28	मिथुन22.43	24	
दशमी	रवि	20.11	मृग	9.53	मिथुन	25	
एका.	सोम	17.31	आर्दा पुर्न	8.01 29.59	कर्क 24.30	26	भद्रा 6.52 से 17.31 तक, आमलकी एका.व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	मंगल	14.41	पुष्य	27.51	कर्क	27	भौम प्रदोष व्रत
त्रयो.	बुध	11.49	आश्ले	25.46	सिंह25.46	28	
चतु.	गुरू	9.02	मघा	23.49	सिंह	1 मार्च	भद्रा 9.02 से 19.42 तक, व्रत स्नान दान, होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन, 19.42 के बाद, चैतन्य महाप्रभु जयंती,
पूर्णिमा	गुरू	30.26	+ +	+ +	+ +	+	पूर्णिमा तिथि क्षय

चैत्र कृष्ण पक्ष, साधारण, वि.सं. 2074 2 मार्च 2018 से 13 मार्च 2018 तक शिशिर ऋतु एवं 14 मार्च 2018 से मीन की संक्रान्ति से बसन्त ऋतु 17 मार्च 2018 उत्तरायण

तिथि	वार	घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश	तारीख	विवरण
प्रतिपदा	शुक्र	28.10	पू.फा.	22.09	कन्या27.48	2	फाग
द्वितीया	शनि	26.22	उ.फा.	20.55	कन्या	3	
तृतीया	रवि	25.10	हस्त	20.15	कन्या	4	भद्रा 13.41 से 25.09 तक
चतुर्थी	सोम	24.40	चित्रा	20.15	तुला8.14	5	श्री गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 21.44 हरिद्वार
पंचमी	मंगल	24.57	स्वा.	21.00	तुला	6	रंगपचंमी
षष्ठी	बुध	26.00	विशा	22.31	वृश्चि16.04	7	भद्रा 26.00 से
सप्तमी	गुरू	27.47	अनु	24.42	वृश्चि	8	भद्रा 14.49 तक
अष्टमी	शुक्र	30.05	ज्ये.	27.27	धनु27.27	9	भैरवाष्टमी, सन्तान अष्टमी, शीतलाष्टमी
नवमी	शनि	0.00	मूल	30.30	धनु	10	
नवमी	रवि	8.39	पू.षा.	0.00	धनु	11	भद्रा 22.02
दशमी	सोम	11.21	पू.षा.	9.37	मकर16.22	12	भद्रा 11.21 तक
एका.	मंगल	13.47	उ.षा.	12.32	मकर	13	पापमोचनी एकादशी व्रत (सर्वेषाम)
द्वादशी	बुध	15.49	श्रवण	15.05	कुम्भ28.12	14	पंचक आरम्भ 28.12 प्रदोष व्रत मीन की संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न बाद
त्रयो.	गुरू	17.20	धनि	17.10	कुम्भ	15	भद्रा 17.20 से 29.54 तक, मासशिवरात्रि व्रत
चतु.	शुक्र	18.19	शत	18.42	कुम्भ	16	
अमा.	शनि	18.43	पू.भा.	19.41	मीन13.29	17	स्नान दान श्राद्ध अमावस्या

सन्दिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था (सं0 2074 वि0)

1. **नव संवत्सर का प्रारम्भ :**–इस स्थिति में स्पष्ट है नव संवत्सर आरम्भ उस दिन होगा, जिस दिन चैत्र अमावस्या समाप्त हो रही है। इस विषय में धर्मसिन्धु कार का वचन है।

तत्र चैत्र–शुक्ल–प्रतिपदा संवत्सर आरम्भ। तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा।।

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय है, अर्थात् सं. 2074 वि. के चैत्र कृष्ण की अमावस्या वाले दिन (28 मार्च 2017 ई0 को) मंगलवार को ही यह चैत्रशुक्ल प्रतिपदा प्रारम्भ होकर समाप्त हो रही है। अतः उपरोक्त निर्णयानुसार चान्द्र संवत्सर 2074 वि. का प्रारम्भ इसी दिन 28 मार्च 2017 ई0 मंगलवार को ही होगा।

वासन्त नवरात्रारम्भ :– '' अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्त्तामात्रा कर्त्तव्या द्वितीयायां गुणन्विता।। यदि प्रतिपदा का क्षय हो जाए तो भी पहले ही दिन (अमावस्या युक्त प्रतिपदा में ही) नवरात्रारम्भ करने का शास्त्रनिर्देष है। निर्णयसिन्धुः में यही बात स्पष्ट रूप से लिखी है परदिने प्रतिपदो व्यन्तासत्वे तु दर्षयुता पूवैव ग्राह्या'' इस विषय में धर्मसिन्धु कार का भी यही प्रतिपादन है **'' प्रतिपदो मुहूर्त्तन्यूनव्याप्तौ सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या''**

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय है अतः इस वर्ष वासन्त नवरात्रारम्भ अमावस्या युक्त (2073 संवत्सरीय चैत्र कृष्ण अमावस्या से युक्त) प्रतिपदा वाले दिन (28 मार्च 2017 ई0 मंगलवार को) ही होगा।

गुप्त नवरात्रों के प्रारम्भ के लिए भी यही नियम लागू होता है।

श्रीरामनवमी व्रतः–श्रीराम का जन्म मध्याह्नव्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी में हुआ था। अतः मध्याह्नव्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी के ही दिन ''श्रीरामनवमी'' व्रत करने का विधान है श्री राम के जन्म के समय पुनर्वसु नक्षत्र भी था, अतः पुनर्वसुयुता मध्याह्नव्यापिनी नवमी में व्रत का विशेष माहात्म्य है। इस वर्ष 4 अप्रैल 2017 ई. को मध्याह्न के समय नवमी पुनर्वसुयुता है अतः यह व्रत इस वर्ष इसी दिन किया जाएगा।

श्री परशुराम जयन्ती :–प्रदोष या रात्रि प्रथमयाम–व्यापिनी वैशाखशुक्ल तृतीया के दिन ''श्रीपरशुराम जयन्ती मनाई जाती है।'' धर्मसिन्धु'' का वचन है ''इयं रात्रिप्रथमयाम–व्यापिनी ग्राह्या ।'' पुरूषार्थचिन्तामणि'' कार कहते है कि–यह पर्व प्रदोषव्यापिनी तिथि में मनाया जाए– 'सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या'' ध्यान रहे यह प्रथमया का अर्थ अधिकतर निबन्धकरों ने प्रदोष ही माना है इस वर्ष यह तृतीया 28 अप्रैल 2017 ई. को प्रदोषव्यापिनी है। अतः इस वर्ष यह पर्व 28 अप्रैल 2017 ई. को ही होगा।

अक्षयतृतीया :– धर्मसिन्धुकार का वचन हैः–

'' द्वेधाविभक्त–दिन–पूर्वाधैंक–देश–व्यापिनी दिनद्वये चेत् त्रिमुहूर्त्ताधिक्याप्तिसत्वे परा, त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वा''।।

इस वर्ष यह तृतीया 29 अप्रैल 2017 ई. को त्रिमुहूर्त्ताल्प है अतः यहां अक्षयतृतीया पहले दिन 28 अप्रैल 2017 ई0 को ही मनाई जाएगी।

श्री गंगा दशहरा :–पूर्वाह्नव्यापिनी ज्येष्ठशुक्ल दशमी को पृथ्वी पर गंगावतरण हुआ था इसीलिए पूर्वाह्न दशमी के दिन गंगादशहरा मनाया जाता है। यदि दशमी दो दिन पूर्वाह्नव्यापिनी हो तब निम्नांकित इस योगों में से अधिकतर योगों का संयोजित दिन हो, उसी दिन यह पर्व होता है यह दस योग इस प्रकार

है– 1. ज्येष्ठमास 2. शुक्लपक्ष 3. दशमीतिथि 4. बुधवार 5. हस्तनक्षत्र 6. व्यतिपात योग 7. गरकरण 8. आनन्द योग 9. कन्यास्थ चन्द्र और 10. वृषस्थ रवि।

इस वर्ष दशमी 3 और 4 जून 2017 ई. दोनो तरीखों में पूर्वाह्वव्यापिनी है, अतः उपरोक्त नियमानुसार यह पर्व इस वर्ष 4 जून 2017 ई0 को मनाया जाएगा।, क्योंकि इसदिन दस योगों में से 8 योग उपलब्ध है।

गुरूपूर्णिमा (व्यास पूजा):– यहां निर्णयसिन्धु कार भी यही लिखते है:–
''अत्रैव (आषाढ़ शुक्ल पौर्षाआमास्या) व्यासपूजोक्ता। '' तत्र त्रिमुहूर्त्ता चेत्परैवेति संन्यासपद्धतौ।''

इस वर्ष यह पूर्णिमा 9 जुलाई 2017 को सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्ताधिक–व्यापिनी होने से परविद्धा है, जिससे यह पर्व 9 जुलाई 2017 ई. को ही होगा।

युजुर्वेदियों का उपाकर्म:–
'' पर्वणि श्रवणे कार्ये ग्रहसंक्रान्त्यपूषिते, अध्वर्युभिर्वहूवृचैश्व,
कथंचित्तदसभंवे तत्रैव हस्तपंचम्यों तयो: केवलयोरपि''

शास्त्रवाक्य अनुसार ग्रहण या संक्रान्ति से युक्त दिन में उपाकर्म नहीं करते इस वर्ष श्रावण पूर्णिमा के दिन संक्रान्ति तो नही हैं, परन्तु मध्यरात्रि से पूर्व खण्ड चन्द्रग्रहण घटित होने से यहां ग्रहण–दोष माना जाएगा। अतएव यजुर्वेदियों को उपाकर्म भी 28 जुलाई को हस्तनक्षत्र युता श्रावणशुक्ल पंचमी/षष्ठी के दिन होगा।
सभी शुक्ल, कृष्ण यजुर्वेदियों के लिए उपाकर्म के तीन काल है।

1.श्रावणपूर्णिमा, 2. श्रावण शुक्ल पंचमी, 3.श्रावण शुक्ल में हस्त नक्षत्र यह उपाकर्म का मुख्य काल श्रावणी पूर्णिमा है, क्योंकि यहां पूर्णिमा ग्रहणदूषित है, अतः ऋग्वेदियों की भांति यहां भी यजुर्वेदी श्रावणशुक्ल की पंचमी या हस्त में उपाकर्म करते है स्पष्ट है, यहां हस्त नक्षत्र में पूर्वाह्व के समय उपाकर्म करेंगे।
सामवेदी उपाकर्म:– सामवेदी लोग भाद्र, शुक्ल में अपराह्वव्यापी हस्तनक्षत्र में उपाकर्म करते है। यदि दोनों दिन हस्तनक्षत्र अपराह्व के एकदेष का ही स्पर्श करे तो उपाकर्म दूसरे दिन होता है। इस वर्ष अगस्त की 24 और 25 दोनो तरीखों को हस्तनक्षत्र आंशिकरूप में अपराह्व को स्पर्श कर रहा है। अतः उपरोक्त निर्णयानुसार सामवेदियों को उपाकर्म 25 अगस्त 2017 ई0 को ही करना होगा।

प्रोष्ठपदी श्राद्ध:–यह पार्वण श्राद्ध है भाद्र शुक्ल अपराह्णव्यापिनी पूर्णिमा में यह श्राद्ध किया जाता है इसमें पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही तथा मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह एवम् मातामही का श्राद्ध करना चाहिए। इस वर्ष भाद्र, पूर्णिमा 5 सितम्बर 2017 ई0 को ही अपराह्वव्यापिनी है अतःइस वर्ष प्रोष्ठपदी श्राद्ध इसी दिन होगा।

त्रयोदशी का महालय श्राद्ध:–यह पार्वण श्राद्ध है क्योंकि पार्वण श्राद्ध दोपहर में किया जाता है और 18 सितम्बर 2017 ई. को त्रयोदशी तिथि दोपहर प्रारम्भ होने से पूर्व ही समाप्त हो जाती है जिससे यह इस दिन दोपहर व्यापिनी नहीं है यह तिथि 17 सितम्बर को ही दोपहर व्यापिनी है, अतः इस तिथि का यह श्राद्ध 17 सितम्बर 2017 को द्वादशी श्राद्ध वाले दिन ही लिखा गया है।
श्री महाशिवरात्रि व्रत:– निषीथव्यापिनी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन यह व्रत किया जाता है यहां निषीथ शब्द से रात्रि का मध्यवर्ती (अष्टम) मुहूर्त ग्रहण

धर्मशास्त्रों ने इस प्रकार किया है।

1. चतुर्दशी पहले ही दिन निषीथव्यापिनी (रात्रि के समय) हो तो व्रत पहले दिन
2. चतुर्दशी दूसरे ही दिन निषीथ व्यापिनी हो तो व्रत दूसरे दिन।
3. चतुर्दशी दोनों दिन निषीथव्यापिनी न हो तो व्रत दूसरे दिन।
4. चतुर्दशी दोनों दिन निषीथ को पूरी तरह या आंशिक रूप से व्याप्त करे तो भी व्रत दूसरे दिन।
5. चतुर्दशी दूसरे दिन रात्रि के एक पहर को और पहले दिन सम्पूर्णभाग को व्याप्त करे तो व्रत पहले दिन।
6. चतुर्दशी पहले दिन रात्रि के एक पहर को और दूसरे दिन सम्पूर्णभाग को व्याप्त करे तो व्रत दूसरे दिन।

इस वर्ष (सं. 2074 वि. में) भारत में पूर्वी व पश्चिमी भागों में दो भिन्न–भिन्न तारीखों को '' श्री महाशिवरात्रि पर्व'' मनाया जाएगा। 13 फरवरी 2018 को फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी भारत में सर्वत्र निषीथ (सम्पूर्ण रात्रि) को पूर्णतया व्याप्त कर रही है। हरिद्वार क्षेत्र में शिव रात्रि का महापर्व 13.02.2018 को मनाया जाना चाहिए।

विशेष आग्रह

श्री गंगा जी में स्नान करने के पश्चात् उतारे हुए कपड़े छोडना एवं प्लास्टिक आदि गंगा जी में डालना मना है आप से अनुरोध है मां गंगा की पवित्रता, निर्मलता एवं अविरलता बनाए रखने में सहयोग प्रदान करे।

त्यौहार एवं व्रत

त्यौहार	दिनांक
नव सवत्सर 2074	28 मार्च 2017
बसन्त नवरात्र प्रारम्भ	28 मार्च 2017
दुर्गा अष्टमी रामनवमी	04 अप्रैल 2017
श्री महावीर जयन्ती	09 अप्रैल 2017
वैशाखी स्नान	13 अप्रैल 2017
श्री परशुराम जयन्ती	28 अप्रैल 2017
श्री शिवाजी जयन्ती	28 अप्रैल 2017
श्री अक्षय तृतीया	28 अप्रैल 2017
श्री गंगा सप्तमी	02 मई 2017
श्री बगलामुखी जयन्ती	03 मई 2017
श्री जानकी जयन्ती	04 मई 2017
श्री नृसिंह जयन्ती	09 मई 2017
श्री कूर्म जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा	10 मई 2017
श्री वैशाख पूर्णिमा	10 मई 2017
श्री वट सावित्री व्रत	25 मई 2017
श्री गंगा दशहरा	4 जून 2017
श्री निर्जला एकादशी	5 जून 2017
श्री कबीर जयन्ती	09 जून 2017
श्री जगन्नाथ महोत्सव	25 जून 2017
श्री हरिशयनी एकादशी	04 जुलाई 2017
श्री गुरू पूर्णिमा	09 जुलाई 2017
श्री श्रावण शिवरात्रि	21 जुलाई 2017
सिंधारा	25 जुलाई 2017
तीजो	26 जुलाई 2017
उपाकर्म श्रावणी	28 जुलाई 2017

रक्षा बन्धन	7 अगस्त 2017
बूढ़ी तीज व्रत	10 अगस्त 2017
चन्दन षष्ठी व्रत	13 अगस्त 2017
श्री कृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त)	14 अगस्त 2017
श्री कृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव)	15 अगस्त 2017
सोमवती अमावस्या	21 अगस्त 2017
कुशोत्पाटिनी अमावस्या	21 अगस्त 2017
गौरा तीज, वराह जयन्ती	24 अगस्त 2017
साम वेद उपाकर्म	25 अगस्त 2017
श्री गणेश चतुर्थी (चन्द्र दर्शन)	25 अगस्त 2017
श्री चन्द्र नवमी	30 अगस्त 2017
मेला गुघाल, कनखल	31 अगस्त 2017
मेला गुघाल, ज्वालापुर	03 सितम्बर 2017
अनन्त चतुर्दशी	05 सितम्बर 2017
पितृ पक्ष श्राद्ध आरम्भ	05 सितम्बर 2017
विश्वकर्मा पूजा	17 सितम्बर 2017
पितृ विसर्जन	19 सितम्बर 2017
शारदीय नवरात्र प्रारम्भ	21 सितम्बर 2017
अग्रसेन जयन्ती	21 सितम्बर 2017
विजयादशमी	30 सितम्बर 2017
श्री महात्मा गांधी जयन्ती	02 अक्टूबर 2017
श्री लाल बहादुर जयन्ती	02 अक्टूबर 2017
शरद पूर्णिमा	05 अक्टूबर 2017
श्री बाल्मीकि जयन्ती	05 अक्टूबर 2017
करवा चौथ	08 अक्टूबर 2017
अहोई अष्टमी	12 अक्टूबर 2017

धनतेरस	17 अक्टूबर 2017
श्री हनुमान जयन्ती	18 अक्टूबर 2017
दीपावली	19 अक्टूबर 2017
गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट	20 अक्टूबर 2017
भैयादूज	21 अक्टूबर 2017
सूर्यषष्ठी छठ पूजा	26 अक्टूबर 2017
गोपालष्टमी	28 अक्टूबर 2017
अक्षय नवमी	29 अक्टूबर 2017
हरिप्रबोधनी एकादशी	31 अक्टूबर 2017
कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरूनानक जय.	4 नवम्बर 2017
गीता जयन्ती	30 नवम्बर 2017
सोमवती अमावस्या	18 दिसम्बर 2017
पं. मदनमोहन मालवीय जयन्ती	25 दिसम्बर 2017
मकर संक्रान्ति	14 जनवरी 2018
मौनी अमावस्या	16 जनवरी 2018
बसन्त पंचमी	22 जनवरी 2018
माघी पूर्णिमा	31 जनवरी 2018
श्री रविदास जयन्ती	31 जनवरी 2018
महाशिवरात्रि व्रत	13 फरवरी 2018
होलिका दहन	01 मार्च 2018
फाग	02 मार्च 2018
शीतलाष्टमी	09 मार्च 2018

भ्रूण हत्या पाप है, गौ हत्या पाप है, जीव हत्या पाप है,
कृपया खाने पीने की वस्तुएं पॉलिथिन में कूडें में ना डाले, गाय पॉलिथिन में खाद्य वस्तुएं खाकर मृत्यु को प्राप्त होती है।

श्री गंगा सभा पर्व निर्णय में तिथि वार नक्षत्र आदि का काल घन्टे मिनट में दिया गया है। रात्रि 24 के बाद का समय 25–26–27 आदि क्रम से सूर्योदय तक बढाया गया है, सूर्योदय के पश्चात का काल 5–6–7 आदि क्रमानुसार दर्शाया गया है। (00.00) मान से तात्पर्य है इस दिवस पर सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक एक ही तिथि है। उदारणार्थ –चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा मंगलवार के दिन 29:47 तक है इसका तात्पर्य यह है कि रात्रि व्यतीत के हो जाने के पश्चात अंग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार बुधवार की प्रातः 5:47 मिनट तक प्रतिपदा तिथि है। परन्तु भारतीय सनातन धर्मानुसार सूर्योदय के पश्चात् ही वार बदलता है। अतः प्रतिपदा तिथि मंगलवार को ही समाप्त हो जायेगी। 5:47 अथवा 29:47 के बाद द्वितीया तिथि प्रारम्भ हो जाऐगी। बुधवार के दिन 29 मार्च 2017 को द्वितीया तिथि मानी जायेगी।

पाठको से अनुरोध है। कि 24 घन्टे के पश्चात का समय 26–27–28 आदि को रात्रि 1–2–3 जाने तथा जब तक का काल 24 के बाद का दर्शाया गया है वह सूर्योदय से पूर्व का ही है।

विद्वत परिषद्
गंगा सभा (रजि0), हरिद्वार

समय शुद्धि

बृहस्पति अस्त	10 अक्टूबर 2017	कार्तिक कृष्ण पक्ष
बृहस्पति उदय	7 नवम्बर 2017	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
शुक्र अस्त	15 दिसम्बर 2017	पौष कृष्ण पक्ष
शुक्र उदय	2 जनवरी 2018	फाल्गुन कृष्ण पक्ष

गंगा जी में पॉलिथीन आदि न फेकें, गंगा जी को स्वच्छ बनाने में सहयोग करें

विक्रम संवत् 2074 की मासिक गणेश चतुर्थी

चैत्र शुक्ल पक्ष	31 मार्च 2017
वैशाख कृष्ण पक्ष	14 अप्रैल 2017
वैशाख शुक्ल पक्ष	29 अप्रैल 2017
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	14 मई 2017
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	28 मई 2017
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	13 जून 2017
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	27 जून 2017
श्रावण कृष्ण पक्ष	12 जुलाई 2017
श्रावण शुक्ल पक्ष	26 जुलाई 2017
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	11 अगस्त 2017
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	25 अगस्त 2017
आश्विन कृष्ण पक्ष	9 सितम्बर 2017
आश्विन शुक्ल पक्ष	23 सितम्बर 2017
कार्तिक कृष्ण पक्ष	8 अक्टूबर 2017
कार्तिक शुक्ल पक्ष	23 अक्टूबर 2017
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	7 नवम्बर 2017
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	22 नवम्बर 2017
पौष कृष्ण पक्ष	6 दिसम्बर 2017
पौष शुक्ल पक्ष	22 दिसम्बर 2017
माघ कृष्ण पक्ष	5 जनवरी 2018
माघ शुक्ल पक्ष	21 जनवरी 2018
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	3 फरवरी 2018
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	19 फरवरी 2018
चैत्र कृष्ण पक्ष	05 मार्च 2018

विक्रम संवत् 2074 की प्रदोष व्रत

चैत्र शुक्ल पक्ष	8 अप्रैल 2017
वैशाख कृष्ण पक्ष	24 अप्रैल 2017
वैशाख शुक्ल पक्ष	8 मई 2017
ज्येष्ठा कृष्ण पक्ष	23 मई 2017
ज्येष्ठा शुक्ल पक्ष	6 जून 2017
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	21 जून 2017
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	6 जुलाई 2017
श्रावण कृष्ण पक्ष	21 जुलाई 2017
श्रावण शुक्ल पक्ष	5 अगस्त 2017
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	19 अगस्त 2017
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	3 सितम्बर 2017
आश्विन कृष्ण पक्ष	17 सितम्बर 2017
आश्विन शुक्ल पक्ष	3 अक्टूबर 2017
कार्तिक कृष्ण पक्ष	17 अक्टूबर 2017
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1 नवम्बर 2017
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	15 नवम्बर 2017
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1 दिसम्बर 2017
पौष कृष्ण पक्ष	15 दिसम्बर 2017
पौष शुक्ल पक्ष	30 दिसम्बर 2017
माघ कृष्ण पक्ष	14 जनवरी 2018
माघ शुक्ल पक्ष	29 जनवरी 2018
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	13 फरवरी 2018
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	27 फरवरी 2018
चैत्र कृष्ण पक्ष	14 मार्च 2018

विक्रम संवत् 2074 की एकादशी व्रत

चैत्र शुक्ल पक्ष	7 मार्च 2017
वैशाख कृष्ण पक्ष	22 अप्रैल 2017
वैशाख शुक्ल पक्ष	6 मई 2017
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	22 मई 2017
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	5 जून 2017
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	20 जून 2017
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	4 जुलाई 2017
श्रावण कृष्ण पक्ष	19 जुलाई 2017
श्रावण शुक्ल पक्ष	3 अगस्त 2017
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	18 अगस्त 2017
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	2 सितम्बर 2017
आश्विन कृष्ण पक्ष	16 सितम्बर 2017
आश्विन शुक्ल पक्ष	1 अक्टूबर 2017
कार्तिक कृष्ण पक्ष	15 अक्टूबर 2017
कार्तिक शुक्ल पक्ष	31 अक्टूबर 2017
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	14 नवम्बर 2017
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	30 नवम्बर 2017
पौष कृष्ण पक्ष	13 दिसम्बर 2017
पौष शुक्ल पक्ष	29 दिसम्बर 2017
माघ कृष्ण पक्ष	12 जनवरी 2018
माघ शुक्ल पक्ष	27 जनवरी 2018
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	11 फरवरी 2018
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	26 फरवरी 2018
चैत्र कृष्ण पक्ष	13 मार्च 2018

विक्रम संवत् 2074 की व्रत की पूर्णिमा

चैत्र	10 अप्रैल 2017
वैशाख	10 मई 2017
ज्येष्ठ	8 जून 2017
आषाढ़	8 जुलाई 2017
श्रावण	7 अगस्त 2017
भाद्रपद	5 सितम्बर 2017
आश्विन	5 अक्टूबर 2017
कार्तिक	3 नवम्बर 2017
मार्गशीर्ष	3 दिसम्बर 2017
पौष	1 जनवरी 2018
माघ	31 जनवरी 2018
फाल्गुन	1 मार्च 2018

विक्रम संवत् 2074 की अमावस्या

वैशाख	26 अप्रैल 2017
ज्येष्ठ	25 मई 2017
आषाढ़	24 जून 2017
श्रावण	23 जुलाई 2017
भाद्रपद	21 अगस्त 2017
आश्विन	20 सितम्बर 2017
कार्तिक	19 अक्टूबर 2017
मार्गशीर्ष	18 नवम्बर 2017
पौष	18 दिसम्बर 2017

माघ	17 जनवरी 2018
फाल्गुन	15 फरवरी 2018
चैत्र	17 मार्च 2018

मासिक शिवरात्रि व्रत

वैशाख	24 अप्रैल 2017
ज्येष्ठ	24 मई 2017
आषाढ़	22 जून 2017
श्रावण	21 जुलाई 2017
भाद्रपद	20 अगस्त 2017
आश्विन	18 सितम्बर 2017
कार्तिक	18 अक्टूबर 2017
मार्गशीर्ष	16 नवम्बर 2017
पौष	16 दिसम्बर 2017
माघ	15 जनवरी 2018
फाल्गुन	14 फरवरी 2018
चैत्र	15 मार्च 2018

राहुकाल का समय:–

प्रत्येक दिन 1 घण्टा 30 मिनट राहुकाल रहता है।
रविवार को सायं 4.30 बजे से 6.00 बजे तक
सोमवार को प्रातः 7.30 बजे से 9.00 बजे तक
मंगलवार को दोपहर 3.00 बजे से 4.30 बजे तक
बुधवार को दोपहर 12.00 बजे से 1.30 बजे तक
बृहस्पतिवार को दोपहर 1.30बजे से 3.00 बजे तक
शुक्रवार को प्रातः 10.30 बजे से 12.00 बजे तक
शनिवार को प्रातः 9.00 बजे से 10.30 बजे तक

भद्रा ज्ञान

भद्रा तीन प्रकार की होती है स्वर्गलोक की भद्रा, पाताल की भद्रा, मृत्युलोक की भद्रा। यदि स्वर्गलोक की भद्रा हो तो शुभ कार्य करें, पाताल की भद्रा में लाभ हो तथा मृत्युलोक की भद्रा में सब कार्यो का नाश होता है।

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्ये पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशिनी।।

मेष, मकर, वृष और कर्क के चन्द्रमा में यदि भद्रा हो तो स्वर्ग में वास होता है। कन्या, मिथुन, तुला और धनु के चन्द्रमा में यदि भद्रा हो तो पाताल लोक में वास होता है। कुम्भ, मीन, वृश्चिक और सिंह के चन्द्रमा में यदि भद्रा हो तो मृत्युलोक में भद्रा का वास होता है।

मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे कन्या मिथुन तुला धनुनागे।
कुंभ मीन अलिकेसरि मर्त्यौ विचरित भद्रात्रिभुवन मध्ये।।

'खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण'

7 अगस्त 2017 चन्द्र ग्रहण भारत में दृश्य
ग्रहण स्पर्श– 10:44 रात्रि
ग्रहण मध्य– 11:43 रात्रि
ग्रहण मोक्ष– 12:43 रात्रि
ग्रहण का सूतक ग्रहण स्पर्श से 9 घन्टे पूर्व दोपहर 1:44 मिनट पर होगा।

पंचक

29 मार्च 11.38 तक
21 अप्रैल 14.18 मि0 से 25 अप्रैल 21.53 तक
18 मई 22.11 मि0 से 23 मई 8.23 मि0 तक
14 जून 28.25 मि0 से 19 जून 17.27 मि0 तक
12 जुलाई 9.59 मि0 से 16 जुलाई 24.23 मि0 तक
8 अगस्त 16.12 मि0 से 12 अगस्त 29.54 मि0 तक
4 सितम्बर 23.52 मि0 से 9 सितम्बर 11.44 मि0 तक
2 अक्टूबर 8.50 मि0 से 6 अक्टूबर 19.30 मि0 तक
29 अक्टूबर 17.57 से 2 नवम्बर 29.28 मि0 तक
25 नवम्बर 25.57 मि0 से 30 नवम्बर 16.19 मि0 तक
23 दिसम्बर 8.25 से 27 दिसम्बर 25.36 तक
19 जनवरी 14.12 मि0 से 24 जनवरी 8.35 मि0 तक
15 फरवरी 20.35 मि0 से 20 फरवरी 14.06 मि0 तक
14 मार्च 28.12 मि0 से

'खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण'

31 जनवरी 2018 चन्द्र ग्रहण भारत में दृश्य
ग्रहण स्पर्श– 5:19 सायं
ग्रहण मध्य– 7:01 सायं
ग्रहण मोक्ष– 8:43 रात्रि
ग्रहण हरिद्वार में दृश्य 5:49 मि0 सायं क्योंकि हरिद्वार में चन्द्रोदय 5:49 सायं से शुरू होगा। ग्रहण का सूतक ग्रहण स्पर्श के 9 घन्टे पूर्व 8:19 प्रातः लगेगा।

विक्रम संवत् 2074 की संक्रान्तियां

नाम	तारीख	संक्रमण काल	पुण्यकाल
मेष (वैशाख)	13 अप्रैल 2017	26:03	पुण्यकाल अगले दिन 8:29 तक
वृष (ज्येष्ठ)	14 मई 2017	22:56	पुण्यकाल मध्याह्न उपरान्त
मिथुन (आषाढ़)	15 जून 2017	05:32	पुण्यकाल मध्याह्न 11:56 तक
कर्क (श्रावण)	16 जुलाई 2017	16:23	पुण्यकाल पूर्वदिन 9:43 से
सिंह (भाद्रपद)	16 अगस्त 2017	24:45	पुण्यकाल अगले दिन प्रात:7:10 तक
कन्या (आश्विन)	16 सितम्बर 2017	24:39	पुण्यकाल अगले दिन 7:03 बजे तक
तुला (कार्तिक)	17 अक्टूबर 2017	12:35	पुण्यकाल सूर्योदय के उपरान्त सारा दिन
वृश्चिक (मार्गशीर्ष)	16 नवम्बर 2017	12:22	पुण्यकाल सूर्योदय के उपरान्त सारा दिन
धनु (पौष)	15 दिसम्बर 2017	27:01	पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 9:24 तक
मकर (माघ)	14 जनवरी 2018	13:46	पुण्यकाल सूर्योदय उपरान्त सारा दिन
कुम्भ (फाल्गुन)	12 फरवरी 2018	26:47	पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 9:11 तक
मीन (चैत्र)	14 मार्च 2018	23:42	पुण्यकाल मध्याह्न तक

मूल तथा गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता0 मास घ0मि0 से	ता0 मास घ0मि0 तक
	30 मार्च 9:23
5 अप्रैल 22:49	7 अप्रैल 23:34
15 अप्रैल 13:35	17 अप्रैल 19:31
24 अप्रैल 24:03	26 अप्रैल 19:18
2 मई 28:30	4 मई 29:00
12 मई 20:08	14 मई 26:04
22 मई 10:09	24 मई 6:01
30 मई 11:56	1 जून 11:13
8 जून 26:13	11 जून 8:01
18 जून 18:29	20 जून 15:44
26 जून 21:22	28 जून 19:17
6 जुलाई 08:06	8 जुलाई 14:09
15 जुलाई 24:50	17 जुलाई 23:20
24 जुलाई 7:45	25 जुलाई 28:53
2 अगस्त 15:18	4 अगस्त 21:04
12 अगस्त 6:16	13 अगस्त 29:07
20 अगस्त 17:23	22 अगस्त 14:45
29 अगस्त 22:55	31 अगस्त 28:50
8 सितम्बर 12:30	10 सितम्बर 10:39
16 सितम्बर 25:04	18 सितम्बर 23:24
26 सितम्बर 6:58	28 सितम्बर 12:58
5 अक्टूबर 20:48	7 अक्टूबर 17:51
14 अक्टूबर 6:49	15 अक्टूबर 30:05
23 अक्टूबर 14:49	25 अक्टूबर 20:45

ता0 मास घ0मि0 से	ता0 मास घ0मि0 तक
2 नवम्बर 6:54	3 नवम्बर 27:28
10 नवम्बर 12:23	12 नवम्बर 11:30
19 नवम्बर 21:45	21 नवम्बर 27:47
29 नवम्बर 17:10	1 दिसम्बर 14:27
7 दिसम्बर 19:55	9 दिसम्बर 17:40
16 दिसम्बर 28:12	19 दिसम्बर 10:07
26 दिसम्बर 25:46	28 दिसम्बर 24:37

सन् 2018

3 जनवरी 30:09	5 जनवरी 26:18
13 जनवरी 10:15	15 जनवरी 16:19
23 जनवरी 8:09	25 जनवरी 2:22
31 जनवरी 17:35	2 फरवरी 13:01
9 फरवरी 16:55	11 फरवरी 23:01
19 फरवरी 13:39	21 फरवरी 14:05
27 फरवरी 27:51	1 मार्च 23:49
8 मार्च 24:42	10 मार्च 30:30

पितृ पक्ष 2017 आश्विन कृष्ण पक्ष मे पड़ने वाली श्राद्ध तिथियाँ

05 सितम्बर 2017	पूर्णिमा श्राद्ध
06 सितम्बर 2017	प्रतिपदा श्राद्ध
07 सितम्बर 2017	द्वितीया श्राद्ध
08 सितम्बर 2017	तृतीया श्राद्ध
09 सितम्बर 2017	चतुर्थीश्राद्ध
10 सितम्बर 2017	पंचमी श्राद्ध
11 सितम्बर 2017	षष्ठी श्राद्ध
12 सितम्बर 2017	सप्तमी श्राद्ध
13 सितम्बर 2017	अष्टमी श्राद्ध
14 सितम्बर 2017	नवमी श्राद्ध
15 सितम्बर 2017	दशमी श्राद्ध
16 सितम्बर 2017	एकादशी श्राद्ध
17 सितम्बर 2017	द्वादशी श्राद्ध, त्रयोदशी श्राद्ध
18 सितम्बर 2017	चतुर्दशी श्राद्ध
19 सितम्बर 2017	पितृ विसर्जन, अमावस्या श्राद्ध

श्री गङ्गास्तोत्रम्

देवी सुरेश्वरि भगवति गङ्गे. त्रिभुवनतारिणी तरलतरङ्गे।
शङ्करमौलिविहारिणी विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले।।1।।

हे देवि गंगे! तुम देवगण की ईश्वरी हो, हे भगवति! तुम त्रिभुवन को तारने वाली, विमल और तरल तरंगमयी तथा शंकर के मस्तक पर विहार करने वाली हो। हे मातः! तुम्हारे चरणकमलों में मेरी मति लगी रहे।

भागीरथि सुखदायिनी मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः।
नाहं जाने तव महिमानं पाहि कृपामयि मामज्ञानम।।2।।

हे भागीरथि! तुम सब प्राणियों को सुख देती हो, हे मातः! वेदशास्त्र में तुम्हारे जल का माहात्म्य वर्णित है, मैं तुम्हारी महिमा कुछ नहीं जानता, हे दयामयि! मुझ अज्ञानी की रक्षा करो।।2।।

हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलरतरङ्गे।
दूरीकुरू मम दुष्कृतिभारं कुरू कृपया भवसागरपारम् ।।3।।

हे गंगे! तुम श्रीहरि के चरणों की चरणोदकमयी नदी हो, हे देवि! तुम्हारी तरंगे हिम, चन्द्रमा और मोती की भाँति श्वेत है, तुम मेरे पापों का भार दूर कर दो और कृपा करके मुझे भवसागर के पार उतारो।।3।।

तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ।।4।।

हे देवि! जिसने तुम्हारा जल पी लिया, अवश्य ही उसने परमपद पा लिया, हे मातः गंगे! जो तुम्हारी भक्ति करता है, उसको यमराज नहीं देख सकता (अर्थात् तुम्हारे भक्तगण यमपुरी में न जाकर बैकुण्ठ में जाते है)।।4।।

पतितोद्धारिणि जाहनवि गङ्ग खण्डितगिरिवरमण्डितभङ्गे।
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणी त्रिभुवनधन्ये।।5।।

हे पतितजनों का उद्धार करने वाली जह्नुकुमारी गंगे! तुम्हारी तरंगे गिरिराज हिमालय खण्डित करके बहती हुई सुशोभित होती है, तुम भीष्म की जननी और

जहनुमुनि की कन्या हो, पतितपावनी होने के कारण तुम त्रिभुवन में धन्य हो।।5।।

कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावारविहारिणी गङ्गे विमुखयुवतिकृततरलापाङ्गे।।6।।

हे मात! तुम इस लोक में कल्पलता की भांति फल प्रदान करने वाली हो, तुम जो प्रणाम करता है, वह कभी शोक में नहीं पड़ता, हे गंगे! मानिनि वनिता के समान चंचल कटाक्ष वाली तुम समुद्र के साथ विहार करती हो।।6।।

तव चेन्मातः स्त्रोतः स्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः।
नरकनिवारिणि जाहनवि गङ्गे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे।।7।।

हे गंगे! जिसने तुम्हारे प्रवाह में स्नान कर लिया, वह फिर मातृगर्भ में प्रवेश नहीं करता, हे जाहनवि! तुम भक्तों को नरक से बचाती हो और उनके पापों का नाश करती हो, तुम्हारा माहात्म्य अतीव उच्च है।।7।।

पुनरसदङ्गे पुण्यतरङ्गे जय जय जाहनवि करूणापाङ्गे।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे सुखदे शुभदे भृत्यशरण्ये।।8।।

हे करूणा कटाक्ष वाली जहनुपुत्री गंगे! मेरे अपावन अंगों पर अपनी पावन तरंगों से युक्त हो उल्लसित होने वाली, तुम्हारी जय हो! जय हो! तुम्हारे चरण इन्द्र के मुकुटमणि से प्रदीप्त है, तुम सबको सुख और शुभ देने वाली हो और अपने सेवक को आश्रय प्रदान करती हो।।8।।

रोगं शोकं तापं पापं हर में भगवति कुमतिकलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिमर्म खलु संसारे।।9।।

हे भगवति! तुम मेरे रोग, शोक, ताप, पाप और कुमति–कलाप को हर लो, तुम त्रिभुवन की सार और वसुधा का हार हो, हे देवि! इस संसार में एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।।9।।

अलकानन्दे परमानन्दे कुरू करूणामयि कातरवन्द्ये।
तव तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ।।10।।

हे दुःखियों की वन्दनीय देवि गंगे! तुम अलकापुरी को आनन्द देने वाली और

परमानन्दमयी हो, तुम मुझ पर कृपा करो, हे मातः! जो तुम्हारे तट के निकट वास करता है, वह मानो वैकुण्ठ में ही वास करता है।॥10॥

वरमिह नीरे कमठो मीनः किं वा तीरे शरटः क्षीणः।
अथवा श्वपचो मलिनो दीनस्तव न हि दूरे नृपतिकुलीनः ॥11॥

हे देवि! तुम्हारे जल में कच्छप या मीन बनकर रहना अच्छा है, तुम्हारे तीर पर दुबला–पतला गिरगिट (कृकलास) बनकर रहना अच्छा है या अति मलिन दीन चाण्डाल कुल में जन्म ग्रहण कर रहना अच्छा है, परंतु (तुमसे) दूर कुलीन नरपति होकर रहना भी अच्छा नहीं।॥1॥

भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये।
गङ्गास्तवमिममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम्॥12॥

हे देवि! तुम त्रिभुवन की ईश्वरी हो, तुम पावन और धन्य हो, जलमयी तथा मुनिवर की कन्या हो। जो प्रतिदिन इस गंगा स्त्रोत का पाठ करता है, वह निश्चय ही संसार में जयलाभ कर सकता है।॥2॥

येषां हृदये गङ्गाभक्तिस्तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः।
मधुराकान्तापञ्झटिकाभिः परमानन्दकलिललिताभिः॥13॥

जिनके हृदय में गंगा के प्रति अचला भक्ति है, वे सदा ही आनन्द और मुक्तिलाभ करते है, यह स्तुति परमानन्दमयी सुललित पदावली से युक्त, मधुर और कमनीय है।॥3॥

गङ्गास्त्रोत्रमिदं भवसारं वाञ्छितफलदं विमलं सारम्।
शङ्करसेवकशङ्कररचितं पठति सुखी स्तव इति च समाप्तः॥14॥

इस असार संसार में उक्त गंगास्तोत्र ही निर्मल सारवान् पदार्थ है, यह भक्तों को अभिलषित फल प्रदान करता है, शंकर के सेवक शंकराचार्यकृत इस स्तोत्र को पढ़ता है वह सुखी होता है इस प्रकार यह स्त्रोत समाप्त हुआ।॥4॥

(॥ इति श्री मच्छङ्कराचार्यविरचितं श्री गङ्गास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥)

श्री गंगा सभा (रजि0) हरिद्वार, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी की सूची

क्र. सं	नाम	पद
1	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	सभापति
2	श्री जगदीश अत्री	उपसभापति
3	श्री सुनील सेठ	उपसभापति
4	श्री नत्थूराम उर्फ जितेन्द्र कुमार सैरया	उपसभापति
5	श्री सुभाष जी त्रिपाठी	उपसभापति
6	श्री महेश कुमार वशिष्ठ	उपसभापति
7	श्री गोपाल प्रधान	उपसभापति/उपाध्यक्ष
8	श्री अनिल गिरि	उपसभापति
9	श्री पुरूषोत्तम शर्मा ''गांधीवादी''	अध्यक्ष
10	श्री रामकुमार मिश्रा	महामंत्री
11	श्री श्रीकान्त जी वशिष्ठ	स्वागत मंत्री
12	श्री अनुराग झा	प्रचारमंत्री
13	श्री आशुतोष शर्मा	समाज कल्याण मंत्री
14	श्री प्रदीप झा	सचिव स्वागत एवं घाट व्यवस्था पर्व जयन्ती समिति
15	श्री मंयक शर्मा (भजोराम)	सचिव प्रचार, गंगा प्रदूषण नियंत्रण, मद्यनिषेध
16	श्री दुष्यन्त झा	सचिव समाज कल्याण न्याय समिति
17	श्री नितिन खेडेवाले	सचिव गंगा सेवक दल
18	श्री आशीष अल्हड	सचिव विद्वत् परिषद् एव कर्मकाण्ड समिति
19	श्री भूपेन्द्र पटुवर	सचिव भूमि व्यवस्था एवं निर्माण समिति
20	श्री वैभव सराये वाले	सचिव ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम सहायक सभा

पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी की सूची श्री गंगा सभा (रजि0),हरिद्वार

क्र. सं	नाम	पद
21	श्री नन्दकिशोर सरेयै	सचिव अखिल भारतीय तीर्थ पुरोहित सहायक महासभा
22	श्री आनन्द प्रकाश दलाल	कोषाध्यक्ष
23	श्री गौरव गोविन्द त्रिपाठी	आय व्यय निरीक्षक
24	श्री मनीष पचभैया	दलपति
25	श्री अविक्षित रमन	सम्पादक गंग पल्लवी

सदस्य कार्यकारिणी

26 श्री विनय श्रोत्रिय
27 श्री प्रदीप जगता
28 श्री प्रेम त्रिपाठी
29 श्री उपेन्द्र शर्मा, ठेकेदार
30 श्री देवेन्द्र कांकर
31 श्री सुनीत मिश्रा
32 श्री मनोज त्रिपाठी (म्याने हनुमानदास के)
33 श्री उमाकान्त श्रोत्रिय
34 श्री यतीन्द्र जी सिखौला
35 श्री रोहित तुम्बडिया
36 श्री योगेश जी ठेकेदार
37 श्री पंकज कौशिक, एडवोकेट
38 श्री वीरेन्द्र कीर्तिपाल
39 श्री पवन मौलातिया

श्री गंगा सभा (रजि0) हरिद्वार, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी की सूची

क्र. सं	नाम	पद

40 श्री विकास सुक्खनराजा
41 श्री राजेश शिवपुरी
42 श्री मणिकान्त अंगारसोडिया
43 श्री संजय मिश्रपुरी (नेपाली पंडा)
44 श्री जितेन्द्र विद्याकुल
45 श्री नितिन पालीवाल
46 श्री रामकृष्ण प्रधान
47 श्री पकंज अधिकारी
48 श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी
49 श्री हितेश शर्मा
50 श्री मोहित विद्याकुल
51 श्री कमलकान्त हेम्मनके
52 डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा (अरूण)
53 श्री करूणेश जी मिश्रा
54 श्री मधुरमोहन शर्मा (सराये वाले)
55 श्री विवेक मिश्रा (मिश्रोटे)
56 श्री श्रीमोहन अधिकारी
57 श्री रमन पचभैया
58 श्री संदीप शर्मा (सरायेवाले)

कृष्ण कुमार शर्मा
सभापति

पुरूषोत्तम शर्मा ''गांधीवादी''
अध्यक्ष

रामकुमार मिश्रा
महामंत्री

विद्वत परिषद् एवं कर्मकाण्ड समिति

श्री आशीष अल्हड–सचिव
श्री कृष्ण कुमार लकडहारे–सदस्य
श्री ब्रह्मदत्त सिखौला–सदस्य
श्री संजीव शास्त्री–सदस्य
श्री सुरेन्द्र दत्त मौर्चेवाले–सदस्य
श्री प्रतीक मिश्रपुरी–सदस्य
श्री हरिओम जयवाल–सदस्य
श्री अवधेश भक्त–सदस्य
श्री सुरेन्द्र सिखौला–सदस्य
श्री विनय खेवडिया–सदस्य
श्री अमित भक्त–सदस्य
श्री अरूण त्रिपाठी–सदस्य
श्री वासु मिश्रा– सदस्य
श्री अमित शास्त्री–सदस्य

श्री गंगा सभा (रजि0) हरिद्वार आचार्य पं0 ब्रिजेश जी वशिष्ठ, पं0 एन0 आर0 वशिष्ठ, पं0 प्रवीन झा,पं.गौरव शर्मा दीनानाथ, पं अनिरुद्ध मिश्रा की हृदय से आभारी है। जिनके सहयोग से श्री गंगा तिथि एवं पर्व निर्णय पत्रिका वि.सं. 2074 के संस्करण का प्रकाशन संभव हो पाया है।

श्री गंगा जी की आरती

ॐ जय गंगे माता मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता 2 मनवांछित फल पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।1।।।

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी 2 सो नर तर जाता।।
ॐ जय गंगे माता।।2।।

पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी 2 त्रिभुवन सुख दाता।।
ॐ जय गंगे माता।।3।।

एक ही बार जो तेरी शरणागति आता।
यम की त्रास मिटा कर 2 परमगति पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।4।।

आरती मात तुम्हारी जो जन नित गाता।
सेवक सो ही सहज में मुक्ति को पाता।।
ॐ जय गंगे माता।।5।।